लोक कथाओं में मृत्यु

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Cover Title : Mrityu (Death in Folktales)
Cover Page picture : Coffin
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में मृत्यु 7

1 जादूगरनी और सूरज की बहिन 9

2 स्वर्ग में एक रात 17

3 सही आदमी 26

4 कोफ़ी और देवता 31

5 मरे लोगों के देश की यात्रा 33

6 मौत की आवाज 49

7 मौत के दूत 56

8 सिपाही और मौत 60

9 एक दर्जी स्वर्ग में 79

10 गौडफ़ादर मौत 84

11 ताश खेलने वाला–1 92

12 ताश खेलने वाला–2 112

13 पादरी की आत्मा 117

14 मौत धरती पर कैसे आयी 128

15 आत्मा अमर कैसे हुई 130

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में मृत्यु

इस दुनियॉ में जन्म का तो पता नहीं पर कम से कम मृत्यु निश्चित है। षहॉ तक कि इस पृथ्वी की भी मृत्यु होनी है।

आज हम इस पुस्तक में तुम्हारे सामने वे कहानियॉ प्रस्तुत करने जा रहे हैं जो मृत्यु से सम्बन्धित हैं। जन्म मृत्यु दोनों ही अनियन्त्रित हैं। हमारा उन पर कोई नियन्त्रण नहीं है।

तो लो पढ़ो ये इतनी सारी लोक कथाऐं चार की.... ये सारी लोक कथाएँ हमने तुम्हारे लिये बहुत सारी जगहों से खास तौर पर इकट्ठी की हैं।

1 जादूगरनी और सूरज की बहिन[1]

एक दूर देश के एक राज्य में एक ज़ार और एक ज़ारिट्सा रहते थे। उनके एक बेटा था जिसका नाम था – इवान जारेविच।[2] वह जन्म से ही गूँगा था बोल नहीं सकता था।

जब वह बारह साल का हो गया तो एक दिन वह अपनी घुड़साल में अपने एक घोड़े को देखने भालने गया जिसको वह बहुत प्यार करता था। वह हमेशा उसको कहानियॉ सुनाया करता था। पर इस बार उसने उसको कोई कहानी नहीं सुनायी।

घोड़ा बोला — "इवान ज़ारेविच तुम्हारी मॉ को जल्दी ही एक बेटी होगी और तुम्हारे एक बहिन आ जायेगी। वह एक बहुत भयंकर जादूगरनी होगी और वह तुम्हारे माता पिता और जनता सबको खा जायेगी।

तुम घर जाओ और अपने पिता से कहो कि वह तुमको अपना सबसे अच्छा घोड़ा दें। तुम उस पर चढ़ कर यहॉ से निकल जाओ और देखो कि तुम अपनी इस बदकिस्मती से बच सकते हो या नहीं।"

---

[1] The Witch and the Sister of the Sun – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com
This story is taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

[2] Tzar, or Tsar is the title of King in Russia till 1917. Tzaritsa is the wife of the Tzar, and Tzarevich is the son of a Tzar.

इवान ज़ारेविच तुरन्त ही अपने पिता के पास दौड़ा गया और ज़िन्दगी में पहली बार बोला। ज़ार ने जब उसके बोलते हुए सुना तो वह तो इतना खुश हुआ कि उसने उससे यह भी नहीं पूछा कि उसको घोड़ा क्यों चाहिये था। बस उसने अपना सबसे अच्छा घोड़ा तैयार करवाया और उसको दे दिया।

इवान ज़ारेविच उस पर सवार हुआ और वहॉ से भाग लिया जहॉ भी उसकी नजर गयी। वह बहुत देर तक चलता रहा बहुत दूर पहुँच गया।

चलते चलते वह दो बूढ़े दर्जियों के पास आया और उनसे पूछा कि क्या वह उनके साथ रह सकता है।

वे बोले — "हमको तुमको अपने पास रखने में बहुत खुशी होती इवान ज़ारेविच पर हमारे साथ एक समस्या है। और वह यह कि अभी तो हम अपनी सुइयों से यह बक्सा तोड़ रहे हैं। इसके बाद हम इसको फिर से सिलेंगे तब तक हमारी उम्र खत्म हो जायेगी।"

इवान ज़ारेविच यह सुन कर रो पड़ा और वहॉ से आगे चल दिया। चलते चलते वह वरतोडूब[3] के पास आया और उससे पूछा कि क्या वह उसको अपना बेटा बनाना पसन्द करेगा।

वरतोडूब भी बोला कि वह उसे अपना बेटा बनाना जरूर पसन्द करता पर जैसे ही उसने ये सारे ओक के पेड़ उनकी जड़ों सहित घुमा दिये उसके मरने का समय आ जायेगा।

[3] Vertodub

इवान जारेविच उसके लिये भी बहुत रोया पर फिर अपने घोड़े पर सवार हुआ और फिर आगे चल दिया। चलते चलते आगे उसको वरतोगोर[4] मिला तो उसने उससे भी यही प्रार्थना की।

वह बोला — "मैं तुम्हें अपने पास रख कर बहुत खुश होता इवान ज़ारेविच पर मुझे बहुत अफसोस है कि मेरी ज़िन्दगी बहुत नहीं है। मुझे यहॉ इन पहाड़ों का मुँह इधर से उधर फेरने के लिये रखा गया है। जैसे ही मैंने आखिरी पहाड़ का मुँह दूसरी तरफ किया कि मैं मर जाऊँगा।"

इवान यह सुन कर बहुत ज़ोर से रो पड़ा पर फिर और आगे बढ़ा। आखिर वह सूरज की बहिन के पास आया। उसने उसे मॉस खिलाया शराब पिलायी और उसको अपना बेटा बनाया। ज़ारेविच का समय वहॉ बहुत अच्छा बीत रहा था पर वह सन्तुष्ट नहीं था।

क्योंकि वह इस बात से बिल्कुल अनजान था कि उसके घर में क्या हो रहा था सो एक दिन वह एक बहुत बड़े से पहाड़ पर चढ़ा और वहॉ से अपने घर की तरफ देखा तो उसने देखा कि वहॉ तो सब कुछ खाया जा चुका है। केवल घर की दीवारें ही खड़ी थीं। वह लम्बी लम्बी उसॉसें ले ले कर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा।

जब वह पहाड़ पर से नीचे उतर आया तो उसको सूरज की बहिन मिली और उससे पूछा — "इवान ज़ारेविच तुम क्यों रोते हो?"

[4] Vertogor

इवान ज़ारेविच बोला — "वहॉ हवा थी जो मेरी ऑखों में कुछ डाल रही थी।" और उसने फिर रोना शुरू कर दिया।

वह पहाड़ पर दोबारा गया और देखा कि उसके मकान की केवल दीवारें ही रह गयी हैं। वह फिर बहुत रोया और घर वापस आ गया।

सूरज की बहिन उसे फिर मिली और उसने उससे फिर पूछा — "इवान ज़ारेविच तुम क्यों रो रहे हो?"

उसने उसको फिर वही जवाब दिया — "वहॉ हवा थी जो मेरी ऑखों में कुछ डाल रही थी।"

वह तीसरी बार पहाड़ पर चढ़ा पर इस बार उसे सूरज की बहिन को मजबूरन सच बताना ही पड़ा। उसने उससे प्रार्थना की वह उसको वहॉ से उसके घर जाने दे ताकि वह यह देख सके कि उसके घर में क्या हो रहा है।

उसने उसको एक ब्रश दिया एक कंघी दी और दो सेब दिये और उसे जाने की इजाज़त दे दी। उसने उसको बताया कि कोई आदमी चाहे कितना भी बूढ़ा क्यों न हो अगर उसके सेबों में से एक सेब खायेगा तो तुरन्त ही जवान हो जायेगा।

यह सब ले कर वह तुरन्त ही वहॉ से भाग लिया।

वह वरतोगोर के पास पहुॅचा। उसके पास हटाने के लिये अब केवल एक ही पहाड़ रह गया था। सो इवान ने अपना ब्रश निकाला और उसको मैदान में फेंक दिया।

अचानक ही चारों तरफ पहाड़ उठने लगे और उनकी चोटियॉ आसमान तक पहुॅच गयीं। और वे इतनी सारी थीं कि उनको कोई गिन नहीं सकता था।

यह देख कर वरतोगोर बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी काम करने लगा। इवान आगे चला तो उसे वरतोडूब मिला। अब उसके पास ओक के केवल तीन पेड़ रह गये थे सो उसने अपनी कंघी निकाली और उसको मैदान में फेंक दी।

तुरन्त ही वहॉ पर ओक के पेड़ों का एक बहुत बड़ा जंगल खड़ा हो गया। हर पेड़ पहले पेड़ से ज़्यादा मोटा था। वरतोडूब यह देख कर बहुत खुश हो गया और अपने काम में लग गया।

उसके बाद इवान दूर चला या पास चला और दोनों बुढ़ियों के पास आया। उसने दोनों बुढ़ियों को एक एक सेब दिया। सेब खा कर तो वे फिर से जवान हो गयीं।

यह देख कर वे बहुत खुश हुईं और उन्होंने उसको एक रूमाल दिया और कहा कि उसके बस हिलाने पर ही एक बहुत बड़ी झील प्रगट हो जायेगी। उस रूमाल को ले कर इवान ज़ारेविच अब अपने घर की तरफ चल दिया।

उसकी बहिन दौड़ी हुई उसके पास आयी और उसको प्यार से सहलाने लगी और बोली — "मेरे भाई अब तुम थोड़ा बैठ जाओ।

मैं जब तक तुम्हारे लिये खाना तैयार करती हूँ तब तक तुम हार्प[5] बजाओ।"

इवान ज़ारेविच वहीं बैठ गया और हार्प के तार कसने लगा कि कमरे के कोने के एक छोटे से छेद से एक बहुत छोटा चूहे का बच्चा बाहर निकल आया और आदमी की आवाज में बोला — "ज़ारेविच तुम यहाँ से जितनी जल्दी हो सके भाग जाओ। तुम्हारी बहिन अपने दाँत तेज़ कर रही है।"

इवान ज़ारेविच तुरन्त ही कमरे से बाहर निकल गया अपने घोड़े पर बैठा और सूरज के पास वापस चल दिया। वह चूहे का बच्चा हार्प के तारों पर ऊपर नीचे घूमता रहा जिससे हार्प में से आवाज निकलती रही और इवान की बहिन को पता भी नहीं चला कि उसका भाई वहाँ से चला गया है।

जब उसने अपने दाँत तेज़ कर लिये तो वह दौड़ी दौड़ी कमरे में आयी पर वहाँ तो कोई था ही नहीं। चूहे का बच्चा भी वहाँ से भाग कर अपने बिल में छिप गया था।

अब वह जादूगरनी तो बहुत गुस्सा थी सो वह इवान का पीछा करने के लिये तैयार हुई।

इवान ज़ारेविच ने अपने पीछे शोर सुना तो पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि उसकी बहिन उसको पकड़ने वाली हो रही है उसने

[5] Harp is a western stringed musical instrument. See its picture above.

तुरन्त ही बुढ़ियों का दिया हुआ रूमाल हिला दिया। उसके पीछे एक बहुत ही गहरी झील पैदा हो गयी।

जादूगरनी ने उसे तैर कर पार करने का फैसला किया। जब वह उसे तैर कर पार कर रही थी इवान वहाँ से बहुत दूर भाग लिया। पर जादूगरनी बहुत तेज़ थी सो वह फिर से उसके पास तक आ पहुँची।

वरतोडूब को लगा कि इवान अपनी बहिन से बच कर भागा जा रहा है सो उसने उसकी सहायता करने के लिये उस जादूगरनी के रास्ते में बहुत सारे ओक के पेड़ रख दिये और उनको उसके रास्ते में चक्कर बना कर घुमा दिया। सो पहले उसको सड़क साफ करनी पड़ी उसके बाद ही वह आगे बढ़ सकी।

इस बीच इवान ज़ारेविच फिर से काफी आगे भाग गया मगर जादूगरनी ने उसे फिर से पकड़ लिया। इस बार वरतोगोर ने कई बड़े बड़े पहाड़ उठा कर उसके रास्ते में रख दिये।

यह देख कर जादूगरनी बहुत गुस्सा हुई पर उसने इवान का पीछा करना नहीं छोड़ा। वह पहाड़ों पर चढ़ गयी और एक बार फिर वह इवान के पास तक पहुँच गयी।

वह चिल्लायी — "तुम इस बार मेरे हाथों से नहीं बच सकते।"

अब तक वह सूरज की बहिन के महल में आ चुका था।

वह चिल्लाया — "सूरज सूरज अपनी बड़ी बड़ी खिड़कियाँ खोलो।"

सूरज ने अपनी बड़ी खिड़की खोली और इवान अपने घोड़े से उसकी खिड़की में कूद गया। जादूगरनी बहिन ने सूरज से उसको अपना भाई देने के लिये कहा पर सूरज ने उसे नहीं दिया।

तब जादूगरनी ने कहा — "इवान ज़ारेविच को तराजू के एक पलड़े पर खड़े हो जाना चाहिये और मैं उसके दूसरे पलड़े पर खड़ी हो जाऊँगी। अगर मैं उससे भारी निकली तो मैं उसे खा जाऊँगी और अगर वह मुझसे भारी निकले तो वह मुझे खा जाये।"

सो एक तराजू रखवायी गयी। पहले उसके एक तरफ इवान ज़ारेविच बैठा और फिर दूसरी तरफ जादूगरनी बैठी। जैसे ही उसने तराजू के दूसरे पलड़े पर अपना पैर रखा कि इवान को एक झटका लगा और वह आसमान में उड़ गया और सूरज के कमरे में जा गिरा। जबकि जादूगरनी जमीन पर ही रह गयी।

2 स्वर्ग में एक रात[6]

एक बार की बात है कि एक जगह दो बड़े अच्छे दोस्त रहा करते थे। एक बार उन्होंने आपस में अपने प्रेम की वजह से यह कसम खायी कि जिस किसी की भी शादी पहले होगी वह दूसरे को अपना बैस्टमैन[7] बनने के लिये बुलायेगा चाहे वह धरती के किसी भी कोने में क्यों न हो।

इत्तफाक की बात कि इस कसम को खाने के कुछ दिन बाद ही उनमें से एक दोस्त चल बसा। और फिर दूसरा दोस्त जो ज़िन्दा बचा था उसकी शादी होने वाली थी।

अब उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या करे। वह कैसे अपने दोस्त को अपना बैस्टमैन बनने के लिये बुलाये सो वह चर्च में अपने कन्फैशन कराने वाले पादरी[8] के पास गया।

पादरी बोला — "यह तो बड़ी अजीब सी बात है। पर तुम्हें अपना वायदा तो निभाना ही चाहिये। चाहे वह मर गया है पर तुमको तो उसको बुलाना ही चाहिये।"

---

[6] One Night in Paradise. A folktale from Friuli, Italy, Europe. Translated from the book: "Italian Folktales : selected and edited by Italo Calvino". 1956. Translated by George Martin in 1980,

[7] In North America the Bestman is a male attendant to the groom in wedding ceremony; while in Europe he is an "Usher". Normally the groom selects him from among his good friends. It is an honor to be the Bestman

[8] There is a custom in Catholic Church that if you have made any mistake or sin, you have the provision to acknowledge it in the Church before a Priest. Ofcourse both cannot see each other as there is a curtain in between them. It is called confession, confessor and confesion box.

फिर पादरी ने उसको सलाह दी — "तुम ऐसा करो कि तुम उसकी कब्र पर जाओ और उसको वही कहो जो तुमको उससे कहना चाहिये। फिर यह उसकी जिम्मेदारी है कि वह तुम्हारी शादी में तुम्हारा बैस्टमैन बनने के लिये आता है या नहीं।"

उस पादरी की बात मान कर वह अपने दोस्त की कब्र पर गया और बोला — "दोस्त, अब समय आ गया है जब तुम्हें मेरा बैस्टमैन बनना है।"

शादी वाले दोस्त के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसके सामने सामने जमीन हिली और उसमें से उसका दोस्त कूद कर बाहर निकल आया और बोला — "हर हाल में मुझे अपना वायदा निभाना है नहीं तो मुझे परगेटरी[9] में जाना पड़ेगा और पता नहीं मुझे फिर वहॉ कब तक रहना पड़े।"

वहॉ से पहले वे दोनों घर गये और फिर वहॉ से शादी के लिये चर्च गये। शाम को शादी की दावत हुई तो वहॉ उस मरे हुए दोस्त ने सबको बहुत सारी कहानियॉ सुनायीं पर सबसे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसने उस दूसरी दुनियॉ के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा कि वहॉ उसने वहॉ क्या देखा या क्या किया।

दुलहा उससे कई सवाल पूछना चाहता था पर उससे किसी भी सवाल पूछने की उसकी हिम्मत ही नहीं पड़ रही थी

[9] In Catholic Christianity, Purgatory is a place or state of suffering where the souls of sinners inhabit before going to Heaven.

दावत खत्म हो जाने के बाद वह मरा हुआ दोस्त उठा और अपने दुलहा दोस्त से बोला — "क्योंकि मैंने तुम्हारे ऊपर यह एहसान किया है कि मैं तुम्हारी शादी में बेस्टमैन बनने के लिये धरती पर आया तो इसके बदले में क्या तुम मेरे साथ वापस कुछ दूर तक चलोगे?"

"ओह क्यों नहीं, क्यों नहीं। यकीनन। पर मैं बहुत दूर तक नहीं जा सकता क्योंकि आज ही तो मेरी शादी हुई है।"

"मुझे मालूम है। तुम जब भी चाहो रास्ते में से लौट सकते हो।"

सो दुलहे ने अपनी दुलहिन से विदा ली और बोला — "मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ अभी वापस आता हूँ।" और वह अपने उस मरे हुए दोस्त के साथ चल दिया।

दोनों बात करते हुए चले जा रहे थे। उन्होंने पहले किसी एक बात के बारे में बात की, फिर दूसरी बात के बारे बात की और फिर बात करते करते वे उस मरे हुए दोस्त की कब्र तक आ गये।

वहाँ उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया। उसी समय ज़िन्दा दोस्त ने सोचा कि अगर मैंने इससे अब नहीं पूछा तो शायद फिर कभी नहीं पूछ पाऊँगा। सो उसने अपना मन पक्का किया और हिम्मत कर के पूछा — "दोस्त, क्योंकि तुम मर गये हो इसलिये मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ।"

"पूछो।"

"इस दुनियॉ के बाद क्या होता है।"

मरा हुआ दोस्त बोला — "मैं खुद तो तुमको इस बारे में ज़्यादा कुछ नहीं बता सकता पर अगर तुम जानना ही चाहते हो तो तुम खुद ही मेरे साथ स्वर्ग क्यों नहीं चलते?"

तभी वह कब्र खुल गयी और वह ज़िन्दा दोस्त अपने मरे हुए दोस्त के पीछे पीछे उस कब्र में चला गया और वे दोनों स्वर्ग में आ गये।

मरा हुआ दोस्त अपने ज़िन्दा दोस्त को एक बहुत ही सुन्दर किस्टल[10] के महल में ले गया। उस महल के दरवाजे सोने के बने थे। वहॉ देवदूत हार्प बजा रहे थे[11] और खुशकिस्मत आत्माऐं उस संगीत पर नाच रहीं थीं। सेंट पीटर वहॉ पर ढोल बजा रहे थे।

वह ज़िन्दा दोस्त तो यह सब शान देख कर भौंचक्का रह गया। उसका तो मुँह खुला का खुला रह गया। उसको इस बात का पता ही नहीं चलता कि वह वहॉ उस महल को कितनी देर तक देखता रहता अगर उसको बाकी का स्वर्ग न देखना होता तो।

मरा हुआ दोस्त बोला — "चलो अब मैं तुमको दूसरी जगह दिखाता हूँ।"

[10] Crystal – glass cut in a special fashion so that the light can reflect in various directions…

[11] Translated for the word "Angels" – they were playing Harp. See the picture of Harp above.

कह कर वह अपने दोस्त को एक बागीचे की तरफ ले गया जिसके पेड़ लकड़ी और पत्तों के न हो कर बहुत सारे रंगों की गाने वाली चिड़ियें दिखा रहे थे।

मरा हुआ दोस्त फिर बोला — "जागो मेरे दोस्त जागो। चलो और आगे चलते हैं।"

कह कर वह अपने दोस्त को एक घास के मैदान की तरफ ले गया जहॉ देवदूत[12] प्रेमियों की तरह से खुशी से नाच रहे थे।

मरा हुआ दोस्त फिर बोला — "चलो अब हम एक तारा देखेंगे।" ज़िन्दा दोस्त को तो तारे इतने अच्छे लगते थे कि वह तो तारे हमेशा के लिये देख सकता था। सो वह उसके पीछे पीछे तारा देखने चल दिया।

फिर वहॉ उसने नदियॉ देखीं जिनमें पानी की जगह शराब बह रही थी और उनकी तलियॉ चीज़ की बनी हुई थीं।[13]

अचानक वह ज़िन्दा दोस्त चिल्ला पड़ा — "ओ मेरे भगवान, ओ मेरे दोस्त, मुझे तो बहुत देर हो गयी। मुझे तो अपनी दुलहिन के पास वापस लौटना था। वह मेरे बारे में चिन्ता कर रही होगी।"

"क्या तुमने स्वर्ग इतनी जल्दी देख लिया?"

"हॉ काफी तो देख ही लिया है। काश मेरे पास मेरी अपनी इच्छा होती।"

[12] Translated for the word "Angels"

[13] Their bottoms were made of cheese – cheese in western world is a processed Indian Paneer.

"अभी तो यहॉ देखने के लिये बहुत कुछ बाकी है।"

"मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा विश्वास है कि यहॉ पर सचमुच ही देखने के लिये काफी कुछ होगा पर अब मुझे वापस जाना चाहिये। मुझे पहले ही काफी देर हो गयी है।"

"ठीक है जैसे तुम्हें अच्छा लगे।" कह कर वह मरा हुआ दोस्त अपने ज़िन्दा दोस्त को कब्र तक वापस छोड़ गया और खुद वहीं गायब हो गया।

ज़िन्दा दोस्त कब्र से बाहर आया पर उसको वह कब्रिस्तान पहचान में ही नहीं आया। उसमें तो बहुत सारे पत्थर और मूर्तियॉ लगी हुई थीं और ऊॅचे ऊॅचे पेड़ खड़े थे। यह कब्रिस्तान पहले तो ऐसा नहीं था।

वहॉ से जब वह बाहर निकला तो उसको बहुत ऊॅची ऊॅची इमारतें दिखायी दीं – पर वहॉ तो पहले सादे से पत्थरों के मकान हुआ करते थे जो सड़क के दोनों तरफ लाइन से लगे हुए थे। ये इतनी ऊॅची ऊॅची इमारतें कहॉ से आ गयीं?

सड़कें कार, ट्रक और कई तरह की और गाड़ियों से भरी हुई थीं और आसमान में हवाई जहाज़ उड़ रहे थे।

"अरे मैं धरती के किस हिस्से में आ गया? क्या मैं किसी गलत सड़क पर आ गया? और देखो तो ये लोग किस तरीके के कपड़े पहने हैं?"

उसने सड़क पर चलते हुए एक बूढ़े को रोका और उससे पूछा — "जनाब यह कौन सा शहर है?"

"तुम्हारा मतलब है कि इस शहर का नाम क्या है?"

"जी हॉ इसी शहर का। इस शहर का नाम क्या है? मैं इसे पहचान नहीं पा रहा हूॅ। क्या आप मुझे उस आदमी के घर का पता बता सकते हैं जिसकी अभी कल ही शादी हुई है।"

वह बूढ़ा बोला — "कल? मैं चर्च की देखभाल करने वाला आदमी हूॅ[14] इसलिये मैं यह बात यकीन के साथ कह सकता हूॅ कि कल तो यहॉ कोई शादी नहीं हुई।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? मेरी खुद की शादी कल हुई थी।" फिर उसने उस बूढ़े को अपने मरे हुए दोस्त के साथ स्वर्ग जाने का पूरा हाल बताया।

बूढ़ा हॅसा और बोला — "लगता है कि तुमने सपना देखा है। यह तो बहुत पुरानी कहानी है जो बूढ़े अपने पोते पोतियों को सुनाते हैं। कि एक दुलहा अपनी शादी के दिन अपनी नयी दुलहिन को छोड़ कर अपने दोस्त के साथ कब्र पर चला गया था और फिर वहॉ से कभी वापस नहीं आया। उसकी पत्नी तो बेचारी उसके दुख में रो रो कर ही मर गयी।"

"यह तो हो ही नहीं सकता क्योंकि वह दुलहा तो मैं खुद हूॅ।"

[14] I am the Sacristan in the Church.

"सुनो, अब तुम केवल एक काम कर सकते हो। वह यह कि हमारे बिशप से जा कर बात कर लो। वही तुमको बता सकते हैं कि कब क्या हुआ था।"

"बिशप? पर यहॉ इस शहर में तो केवल एक पारिश पादरी[15] ही होता है। यह बिशप कहॉ से आ गया।"

"यह पारिश पादरी क्या? यहॉ बिशप को तो रहते बहुत साल हो गये।" और यह कह कर चर्च की देखभाल करने वाला वह बूढ़ा उसको अपने बिशप के पास ले गया।

वहॉ जा कर उस ज़िन्दा दोस्त ने उस बिशप को अपनी कहानी सुनायी तो उस बिशप को एक घटना की याद आयी जो उसने बचपन में सुनी थी। वह पारिश के कई रजिस्टर ले कर आया और उनमें से एक रजिस्टर के पन्ने पीछे की तरफ पलटने लगा।

पन्ने पलटते हुए वह बोला — "तीस साल पहले, नहीं नहीं पचास साल पहले, नहीं नहीं सा सौ साल पहले, नहीं नहीं दो सौ साल पहले, नहीं नहीं... ।

वह पन्ने पलटता रहा और ऐसे ही कुछ कुछ बोलता रहा। आखीर में एक पीले से मुड़े तुड़े पन्ने पर लिखे नामों पर उॅगली रख कर बोला — "हॉ यह तीन सौ साल पुरानी बात है। एक नौजवान कब्रिस्तान में गायब हो गया था और उसकी पत्नी उसके दुख में रो

[15] Parish Priest – lower grade person than BIshop

रो कर मर गयी थी। यह देखो यह पढ़ो अगर तुमको मेरा यकीन न हो तो।"

"पर यह दुलहा तो मैं खुद ही हूँ।"

"ओह तो वह तुम ही हो जो दूसरी दुनियॉ गये थे। मुझे भी तो कुछ बताओ न उस दूसरी दुनियॉ के बारे में।"

पर यह सुन कर वह ज़िन्दा दोस्त तो एक मरे हुए आदमी की तरह पीला पड़ गया, जमीन में धॅस गया और उसके बाद वह स्वर्ग के बारे में उस बिशप से एक शब्द भी कह सकता कि उससे पहले ही वह मर गया।[16]

[16] This story supports two things –

1. That there is an abnormal time gap between this world's time scale and the Other World's time scale because the married man went to Paradise only for one night but it was after 300 years when he came back to Earth again.

This phenomenon is supported by two incidents clearly written in Bhaagvat Puraan – one when Brahmaa Jee took Gwaal Baal to his abode and kept them for a year and secondly when King Raivat went to consult Brahmaa Jee for the groom for his daughter's marriage and when he stayed there only for a few moments but a long time passed on Earth that he could not find anybody who was suggested by him to Brahmaa Jee. Then he married her to Balaraam Jee. Since Balaraam Jee was shorter than Revatee he pressed Revatee a little bit to bring her to his height.

2. That whoever has visted the Other World cannot tell anything about it to a mortal man. He dies before that.

3 सही आदमी[17]

एक बार की बात है कि एक किसान और उसकी पत्नी रहते थे। उनके एक बच्चा था जिसे वे तब तक बैप्टाइज़ नहीं करवाना चाहते थे जब तक कि उनको उसका गौडफ़ादर के लिये उसको कोई सही आदमी न मिल जाये।

आदमी ने बच्चे को अपनी बॉहों में लिया और किसी सही आदमी को ढूँढने के लिये बाहर सड़क पर चला गया कुछ दूर जाने के बाद उसको एक आदमी मिला जो हमारे लौर्ड थे।

उसने उनसे कहा — "मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूँ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय सही आदमी हैं।"

लौर्ड बोले — "मैं तो यह नहीं जानता कि सही आदमी हूँ या नहीं।"

सो वह आदमी उनको वहीं छोड़ कर और आगे बढ़ा तो उसको एक स्त्री मिली जो मडोना[18] थी। उसने उससे भी कहा — "मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूँ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय और सही हैं।"

---

[17] The Just Man. Translated from the book : "Italian Popular Folktales. By James Frederich Crane. 1885. Hindi translation of this book is available from : hindifolktales@gmail.com

[18] Madonna is another name of Mary – Jesus' mother.

मडोना बोली — "मुझे नहीं मालूम कि मैं सही और न्यायप्रिय हूँ या नहीं। तुम चलते जाओ तुमको जरूर ही कोई न कोई सही और न्यायप्रिय आदमी मिल जायेगा।"

सो वह फिर आगे चल दिया। आगे चल कर उसे एक और स्त्री मिली। यह मौत थी। वह उससे बोला — "मुझे आपके पास भेजा गया है क्योंकि मुझसे कहा गया है कि आप सही और न्यायप्रिय हैं। मेरे पास यह बच्चा है। मैं इसे बैप्टाइज़ कराना चाहता हूँ। पर मैं इसे किसी ऐसे आदमी को नहीं देना चाहता जो सही नहीं हो। क्या आप न्यायप्रिय और सही हैं।"

मौत बोली — "हाँ मुझे विश्वास है कि मैं न्यायप्रिय और सही हूँ। चलो बच्चे को बैप्टाइज़ करते हैं और फिर मैं तुम्हें दिखाती हूँ कि मैं न्यायप्रिय और सही हूँ या नहीं।"

तब उन्होंने बच्चे को बैप्टाइज़ कराया। उसके बाद मौत किसान को एक लम्बे कमरे में ले गयी जहाँ बहुत सारी रोशनियाँ जल रही थीं। किसान उस सबको देख कर आश्चर्यचकित रह गया उसने मौत से कहा — "गौडमदर ये रोशनियाँ यहाँ कैसी हैं।"

मौत बोली — ये रोशनियाँ सारी दुनियाँ के आदमियों की हैं। क्या तुम इन्हें देखना पसन्द करोगे। यह देखो यह तुम्हारी ज़िन्दगी की रोशनी है और यह तुम्हारे बेटे की ज़िन्दगी की रोशनी है।"

जब किसान ने देखा कि उसकी ज़िन्दगी की रोशनी तो बुझने वाली है तो उसने पूछा — "और तेल खत्म होने के बाद?"

मौत बोली — "तब तुमको मेरे साथ आना पड़ेगा क्योंकि मैं मौत हूँ।"

किसान चिल्लाया — "मुझ पर दया करो। मुझे मेरे बेटे की ज़िन्दगी की रोशनी में से थोड़ा सा तेल ले कर अपनी रोशनी में डालने दो।"

मौत बोली — "नहीं नहीं। मैं इस तरह का काम नहीं करती। तुमने एक न्यायप्रिय और सही आदमी चाहा था तो वैसा एक आदमी तुम्हें मिल गया है। अब तुम घर जाओ और अपना काम देखो सँभालो क्योंकि मैं तुम्हें बुलाने वाली हूँ।[19]

वेनिस की एक कहानी

यह कथा वेनिस में कही सुनी जाने वाली एक दंत कथा है जो यहाँ संक्षेप में दी गयी है। यह कथा मध्य कालीन युग में कही सुनी जाती थी। एक अमीर नाइट जिसने एक नीच और बुरी ज़िन्दगी गुजारी थी जब वह बूढ़ा हो जाता है तो पछताता है कनफ़ैस करता है और उसका पादरी उसको तीन साल की तपस्या करने के लिये कहता है।

नाइट उसकी इस बात को मानने से मना करता है क्योंकि उसको डर है कि वह दो साल में ही मर जायेगा। और केवल दो साल के लिये ही नहीं उसने एक साल या एक महीने तक के लिये

[19] Another Venetian version of this tale is in Widter-Wolf. (Tale No 3) – as "Godfather Death". There is one Sicilian version also – "Death and Her Godson". By Giuseppe Pitre. (Tale No 109).

मना कर दिया। वह केवल एक रात की तपस्या पर राजी हुआ। वह अपने घोड़े पर चढ़ता है अपने परिवार से विदा लेता है और चर्च पहुँचता है जो उसके घर से कुछ दूरी पर है।

कुछ दूर जाने के बाद वह देखता है कि उसकी बेटी उसके पीछे पीछे भागी हुई आ रही है यह कहने के लिये कि उसके आने के बाद कुछ डाकुओं ने महल पर हमला बोल दिया है।

वह अपने उद्देश्य से डिगता नहीं है और उससे कहता है वह घर वापस जाये घर पर महल की देखभाल करने के लिये बहुत सारे नौकर चाकर हैं।

तभी एक नौकर चिल्लाता है कि महल में आग लग गयी है और उसकी अपनी पत्नी को लोग मार रहे हैं और वह सहायता के लिये चिल्ला रही है। नाइट अपने घर की देखभाल के लिये अपनी जगह अपने नौकरों को शान्ति से अपने रास्ते पर चलता चला जाता है और उससे कहता है कि अब उसके पास इसके लिये कोई समय नहीं है।

आखिर में वह चर्च में घुसता है और अपनी तपस्या शुरू करता है। चर्च की देखभाल करने वाला उसको वहाँ से उठाने की कोशिश करता है ताकि वह चर्च बन्द कर सके।

एक पादरी उसको वहाँ से जाने के लिये कहता है क्योंकि वह मास सुनने का अधिकारी नहीं है। रात को बारह चौकीदार आते हैं

जो उसको अपने साथ जज के पास चलने के लिये कहते हैं। पर वह किसी के कहे से हिल कर भी नहीं देता।

रात को दो बजे सिपाहियों की एक टुकड़ी आती है और उसको चारों तरफ से घेर कर उसको जाने के लिये कहती है। फिर सुबह पॉच बजे कुछ लोग वहॉ आते हैं और उसको वहॉ से भगाने की कोशिश करते हैं "हमको इसे बाहर निकाल देना चाहिये।" तब चर्च जलने लगता है और नाइट आग में चारों तरफ से घिर जाता है पर फिर भी वह वहॉ से कहीं जाता नहीं है।

आखिर जब नियत समय आता है तभी वह चर्च छोड़ कर घर लौटता है तो देखता है उसके किसी परिवार वाले ने महल नहीं छोड़ा जितने भी लागों ने उसे तपस्या के समय तंग किया वे सब शैतान के लोग थे उसको बहकाने के लिये।

उस समय नाइट को पता चलता है कि वह कितना बड़ा पापी था। उसके बाद वह यह घोषित कर देता है कि वह अब ज़िन्दगी भर तपस्या करेगा।

4 कोफ़ी और देवता[20]

कोफ़ी एक किसान का सबसे बड़ा बेटा था। उस किसान के दो पत्नियॉ थीं। कोफ़ी अपनी मॉ का अकेला ही बच्चा था उसके और कोई दूसरा बच्चा नहीं था।

जब कोफ़ी केवल तीन साल का था तो उसकी मॉ चल बसी। तो कोफ़ी को उसकी सौतेली मॉ को दे दिया गया। इसके बाद सौतेली मॉ के कई बच्चे हुए पर कोफ़ी सबसे बड़ा ही रहा।

जब वह दस साल का हुआ तो उसके पिता भी गुजर गये। अब कोफ़ी का कोई रिश्तेदार नहीं रह गया था सिवाय उसकी सौतेली मॉ के जिसके लिये अब उसे काम करना पड़ता था।

जब कोफ़ी और बड़ा हो गया तो उसकी सौतेली मॉ ने देखा कि वह तो उसके अपने बच्चों से कहीं ज़्यादा सुन्दर और होशियार था इसलिये उसको उससे बहुत जलन होने लगी। वह इतना अच्छा शिकारी था कि वह रोज ही बहुत सारा मॉस और मछली ले कर आता था।

उसकी सौतेली मॉ उससे रोज ही वैसे ही व्यवहार करती थी। वह मॉस पकाती उसको बॉटती। वह अपने बच्चों को खूब बड़ा बड़ा हिस्सा दे देती और जब तक उसकी बारी आती तो कहती —

[20] Kowfie and the Gods.

"ओह मेरे कोफ़ी अफसोस तेरे लिये तो कुछ बचा ही नहीं। जा तू बाहर जा कर अपने लिये कुछ पके पपीते तोड़ ला।"

कोफ़ी कभी शिकायत नहीं करता। उसने कभी अपना लाया मॉस चखा भी नहीं। हर खाने के समय दूसरे सबको वह मॉस मिलता पर उसके लिये कभी नहीं बचता।

एक शाम जब ऐसा हो चुका तो वह खेत की तरफ अपने खाने के लिये वहॉ से पके पपीते तोड़ने के लिये चल दिया। उसी समय गॉव में एक देवता अपने कन्धे पर एक थैला लटकाये हुए प्रगट हुए।

उन्होंने गॉव वालों को बुला कर उनसे यह कहा — "मैं इस थैले में तुम सब लोगों के लिये मौत ले कर आया हूँ।"

और ऐसा कह कर उन्होंने अपने थैले में रखी चीज़ सबको बॉटनी शुरू कर दी। जब वह कोफ़ी के पास आये तो उन्होंने कोफ़ी से कहा — "मेरे बेटे कोफ़ी तुम्हारे लिये न तो काफी खाना था और न अब तुम्हारे लिये मौत ही है।"

जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे उसी समय गॉव के सारे आदमी मर गये केवल कोफ़ी ही बचा रहा। अब वह वहॉ शान्ति से रहता था और रहता रहा।

5 मरे लोगों के देश की यात्रा[21]

मिस्र की यह कहानी एक बहुत ही मशहूर कहानी है। यह एक जादूगर लड़के से–ओसिरिस जिसने एक बन्द चिट्ठी पढ़ रखी है[22] और उसके पिता सेटना[23] की जो फैरो रैमसैज़ 2 का बेटा था उन दोनों के डुऐट[24] जाने की कहानी है।

एक बार की बात है कि बहुत दिनों पहले मिस्र में से–ओसिरिस और उसके पिता सेटना थैबैस[25] के महल की खिड़की में खड़े हुए अपने पश्चिम की तरफ से दो जनाज़े आते हुए देख रहे थे।

उनमें से एक तो बहुत ही अमीर आदमी का जनाज़ा था। उसका शरीर एक लकड़ी के ताबूत में रखा हुआ था जिस पर सोने का काम किया गया था।

उसके बहुत सारे नौकर और दोस्त उसको रोते हुए कब्रिस्तान तक ले जा रहे थे। उन लोगों के हाथों में उसके कब्र में रखने के लिये बहुत सारी भेंटें भी थी।

---

[21] Journey to Land of Dead – a tale from Egypt, Africa.
This story taken from the Web Site : http://www.aldokkan.com/art/journey.htm

[22] Read the Tale No 7, for this

[23] Setna – the name of the son of the King of Egypt Pharaoh Ramses II, the Great

[24] Duat – the World of the Dead

[25] Se-Osiris and his father were watching two funerals from the window of the Thebes palace. Thebes is an ancient Egyptian city located east of the Nile about 500 miles south of the Mediterranean Sea. Its ruins lie within the modern Egyptian city of Luxor.

कई पादरी भी उसके आगे पीछे धार्मिक गीत गाते चल रहे थे। वे वे नाम और ताकतवर शब्द भी बोल रहे थे जिनकी उस मरे हुए आदमी को डुऐट के रास्ते में जरूरत पड़ेगी।

दूसरा जनाज़ा एक बहुत ही गरीब आदमी का था। उसके दो बेटे एक सादा सा लकड़ी का बक्सा ले कर जा रहे थे और केवल उसकी पत्नी और बहू उसके पीछे रोते हुए जा रहे थे।

ये दोनों जनाज़े नील नदी के किनारे की तरफ जा रहे थे। वहॉ एक नाव उनको नील नदी के पार ले जाने के लिये उनका इन्तजार कर रही थी।

उन दोनों को नदी के किनारे जाते देख कर सेटना बोला — "मैं उम्मीद करता हूॅ कि मेरी किस्मत में इस अमीर आदमी जैसा जनाज़ा लिखा होगा, इस गरीब मजदूर जैसा नहीं।"

यह सुन कर से–ओसिरिस बोला — "पिता जी, मैं आपके लिये बल्कि इसकी बिल्कुल उलटी प्रार्थना करता हूॅ कि आपको इस गरीब मजदूर जैसा जनाज़ा मिले, न कि उस अमीर आदमी जैसा।"

अपने बेटे के ये शब्द सुन कर सेटना का दिल बहुत दुखी हुआ। इस पर से–ओसिरिस ने अपने पिता को समझाने की कोशिश की — "जो कुछ आप यहॉ देख रहे हैं उसका माट के न्याय के

कमरे[26] से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह बात मैं आपको साबित कर सकता हूँ अगर आप मेरा विश्वास करें तो।

मुझे उन ताकतवर शब्दों का पता है जो सारे दरवाजे खोल देते हैं। मै आपके और अपने दोनों के "बा"[27] को आजाद कर सकता हूँ और अपनी उन आत्माओं को भी जो मरे हुओं की दुनियाँ डुऐट में उड़ कर जा सकती हैं और देख सकती हैं कि वहाँ क्या हो रहा है।

तब आपको पता चलेगा कि इस अमीर आदमी की किस्मत जिसने ज़िन्दगी भर बुरे काम किये और उस गरीब आदमी की किस्मत जिसने ज़िन्दगी में अच्छे कामों के अलावा और कुछ किया ही नहीं कितनी अलग अलग हैं।"

सेटना ने उस सब पर बिना आश्चर्य किये ही विश्वास करना सीख लिया था जो उसका वह आश्चर्यजनक बेटा कहता था।

---

[26] Judgment Hall of Maat - The Egyptian Hall of Maat is where the judgment of the dead was performed in the afterlife. It is also known as the "Hall of the Two Truths" Unlike Semitic Religions, Egyptians had no concept of a general judgment day when all those who had lived in the world should receive rewards and punishment for their deeds; on the contrary each soul was dealt with individually, and was either permitted to pass into the kingdom of Osiris, or was destroyed straightway. First the soul recites the ritual confession, known as the 42 negative confessions, claiming to be guiltless of the offences which are punishable. Sins included doing evil to mankind, theft, fraud, murder, inflicting pain, committing adultery and insulting the gods etc.
Taken from http://www.aldokkan.com/religion/hall_maat.htm

[27] The Ba refers to all non physical qualities that make up the personality of humans. Animals were sometimes thought to be the bau of gods, the Bennu bird was called the Ba of Ra, the Apis bull was worshipped as the Ba of Ptah. Prior to the New Kingdom, no representations of the Ba are certain. The first illustrations of the Ba are found in the Book of the Dead. The Ba was associated with only human beings and gods.

इसलिये वह अब अपने बेटे के साथ डुऐट में जाने के लिये भी राजी हो गया।

हालॉकि वह यह जानता था कि इस तरह की यात्रा खतरे से खाली नहीं थी। क्योंकि अगर एक बार वह वहॉ पहुँच गया तो वहॉ से वह वापस नहीं भी आ सकता था।

सो राजकुमार सेटना और उसका छोटा बेटा से–ओसिरिस दोनों ओसिरिस के मन्दिर[28] में गये जहॉ शाही परिवार के सदस्य होने की वजह से वे आसानी से जा सकते थे।

मन्दिर के अन्दर घुस कर सेटना ने मन्दिर का दरवाजा बन्द कर दिया। तब से–ओसिरिस ने अपने, ओसिरिस की मूर्ति के और उस वेदी[29] के चारों तरफ एक जादुई गोला बनाया जिसमें सीडर की लकड़ी की आग जल रही थी।

फिर उसने वेदी की जलती हुई आग में एक पाउडर फेंका। वह पाउडर उसने तीन बार फेंका। पाउडर फेंकते ही उस आग में से आग का एक गोला उठा और ऊपर हवा में तैर गया।

[28] Temple of Osiris – Osiris is the Male God of the Underworld

[29] Translated for the word “Altar”. An altar is any structure upon which offerings such as sacrifices and worship are made for religious purposes. Altars are usually found at shrines, and they can be located in temples, churches and other places of worship. It may be of several ttypes. Picture of one of its types is given above.

फिर उसने जादू के कुछ ऐसे शब्द कहे जो एक बहुत बड़ी ताकत के नाम पर खत्म होते थे। उस नाम को लेते ही सारा मन्दिर हिल गया और उसकी वेदी की आग और ऊँची कूद कर अँधेरे में खो गयी।

पर ओसिरिस के मन्दिर में अँधेरा नहीं हुआ। सेटना ने घूम कर देखना चाहा कि वहाँ रोशनी कहाँ से आ रही थी तो वह तो डर के मारे चिल्ला ही पड़ता अगर वह चुपचाप शान्त न हो जाता जैसे किसी ने जबरदस्ती उसको लकवा[30] मार दिया हो।

क्योंकि वेदी के दोनों तरफ उसने अपने आपको और अपने बेटे से–ओसिरिस को खड़ा देखा।

तभी अचानक उसको लगा कि वे शरीर उसके अपने और उसके बेटे के असली शरीर नहीं थे बल्कि वे तो उनके अपने शरीरों की केवल परछाइयाँ थीं जो उन दोनों के "का"[31] थीं और दोनों के "का" के ऊपर आग की एक एक लपट घूम रही थी जो उसकी "खू"[32] थी।

उस "खू" की रोशनी से यह पता चल रहा था कि "का" और उसका धुँधला दिखने वाला शरीर किस "का" और "खू" से निकला था।

[30] Translated for the word "Paralysis"

[31] "Ka" means double.

[32] "Khou" means Spirit

तभी शान्ति टूटी और एक पंख गिरने की आवाज़ जैसी फुसफुसाहट की आवाज़ आयी। वह आवाज़ पंख जैसी गिरने की जरूर थी पर उस आवाज ने सारे मन्दिर को भर दिया।

वह से–ओसिरिस की आवाज थी — "मेरे पिता जी, मेरे पीछे पीछे आइये क्योंकि हमारे पास समय कम है और अगर हम मिस्र के ऊपर सूरज का "रा"[33] चमकता हुआ देखना चाहते हैं तो हमको कल सुबह तक वापस भी लौटना है।"

सेटना घूमा और उसने से–ओसिरिस की "बा" यानी उसकी आत्मा को देखा जो एक बड़ी चिड़िया के रूप में थी जिसके सुनहरे पंख थे पर उसका सिर उसके अपने बेटे का ही था।

उसने जबरदस्ती यह कहने की कोशिश की "ठीक है मैं आता हूँ।" तो उसकी आवाज भी फुसफुसाहट के रूप में ही पूरे मन्दिर में गूँज गयी। वह अपनी "बा" के सुनहरे पंखों पर उठा और अपने बेटे से–ओसिरिस की "बा" के पीछे पीछे चल दिया।

उनको ऐसा लगा कि मन्दिर की छत ने खुल कर उनको ऊपर जाने का रास्ता दिया। और पल भर में ही वे पश्चिम की तरफ किसी इथियोपियन[34] के कमान से निकले तीर से भी तेज़ उड़ते नजर आ रहे थे।

[33] "Ra" is the Sun God of Egyptians. He is male. His consort is Divine cow Hathor.

[34] Who live in Ethiopia. It is located in South-East to Egypt.

मिस्र में अँधेरा हो गया था पर डूबते हुए सूरज की एक लाल किरन पश्चिमी रेगिस्तान के पहाड़ों के एक दर्रे, "द गैप औफ ऐबीडोस"[35], पर अभी भी चमक रही थी। वे इसी रास्ते से अँधेरे के पहले क्षेत्र[36] मे घुसे।

उन्होंने अपने नीचे मैसैक्टैट नाव[37] देखी जिसमें सुबह को रा अपनी यात्रा शुरू करता था और दिन खत्म होने पर शाम को डुऐट में जा कर खत्म करता था।

वह नाव तो बहुत शानदार थी। उसमें जो सामान लगा हुआ था वह भी बहुत शानदार था। उसमें जामुनी, नीले, लाल, चमकीले सुनहरी[38] रंग लगे हुए थे।

कुछ देवता उस नाव को सुनहरी रस्सियों से उस भूतिया नदी में खे रहे थे। डुऐट के बन्दरगाह चारों तरफ फैले पड़े थे। वे उस पहले अँधेरे क्षेत्र में छह सॉपों के बीच में से हो कर घुसे जो उनके दोनों तरफ कुंडली लगाये बैठे हुए थे।

रा की उस बड़ी नाव में उन सब मरे हुए लोगों के "का" थे जो उसी दिन मरे थे और जिनको ओसिरिस के न्याय के कमरे[39] की तरफ जाना था।

[35] The Gap of Abydos
[36] First Region of the Darkness
[37] Mesektat boat
[38] Amythst, Turquoise blue, Jasper, deep glow of gold
[39] Judgment Hall of Osiris

सो वह नाव रात के गहरे अँधेरे में अपने रास्ते चली जा रही थी। फिर वह दूसरे क्षेत्र के बन्दरगाह पर आयी। वहाँ दोनों तरफ ऊँची ऊँची दीवारें खड़ी हुई थीं।

उन दीवारों के ऊपर भाले लगे हुए थे ताकि कोई उन दीवारों को पार न कर सके। उनके दरवाजे लकड़ी के डंडे पर घूमते थे। वहाँ भी साँप आग और जहर उगलते हुए उन दरवाजों की चौकीदारी कर रहे थे। पर जो भी वहाँ से उस नाव पर गुजर रहे थे उनके लिये रा ने कुछ ताकतवर शब्द बोले जिससे वे दरवाजे खुल गये।

यह दूसरा क्षेत्र रा का राज्य था और देवता और बड़े लोग जो धरती पर राजाओं की तरह रह चुके थे वे वहाँ शान्ति से रह रहे थे। मक्की की आत्माऐं[40] जो गेहूँ और जौ[41] उगाती हैं और धरती पर फलों को बढ़ाती हैं उन लोगों की रक्षा कर रही थीं।

पर इसके बाद भी वहाँ कोई भी मरा हुआ जो रा की उस नाव में जा रहा था उस जमीन पर रुक नहीं सकता था क्योंकि उनको डुऐट के तीसरे क्षेत्र अमेन्ती[42] जाना होता था जहाँ ओसिरिस का न्याय का कमरा उनके आने का इन्तजार कर रहा था।

[40] Spirits of Corn
[41] Wheat and Barley
[42] Amenti – the third Region of Duat

सो वह नाव अब तीसरे बन्दरगाह पर आयी और ताकत वाले शब्दों के कहने पर वहॉ के बड़े बड़े दरवाजे लकडी के डंडों पर चूँ चूँ करते खुल गये।

फिर भी उनकी चूँ चूँ इतनी ज़्यादा ज़ोर की नहीं थी जितनी कि उस आदमी की आवाज ज़ोर की थी जो उस डंडे पर अपनी ऑखें घुमाता हुआ लेटा हुआ था। वह लकड़ी का डंडा उसकी ऑख में गोल गोल घूम रहा था।

वह वहॉ पर किसी उस बुरे काम की सजा के लिये लेटा हुआ था जो उसने धरती पर किया था।

इस तीसरे क्षेत्र में रा की नाव घुसी और नाव में बैठी सब "का" ओसिरिस के न्याय के कमरे के बाहरी ऑगन में उतर गयीं पर वह नाव उनको उतार कर वहीं नहीं रुकी। उनको उतार कर वह नाव और आगे चलती चली गयी।

उस नाव को रात के नौ क्षेत्र में से हो कर जाना होता था जब तक कि पूर्व के एप या अपैप ड्रैगन[43] के मुँह से अगली सुबह रा का दूसरा जन्म न हो जाये। और तब एक बार फिर सूरज धरती पर सुबह ले कर पूर्व में आता था।

पर फिर भी सुबह को सूरज तब तक नहीं उगता था जब तक कि रा उस एप ड्रैगन से लड़ता नहीं था और उसको हराता नहीं

[43] Egyptian Dragon, called Ape or Apep, is the enemy of Ra. He is supposed to eat Ra in the 9th Region of the Night.

था। यह ड्रैगन रा को रात के दसवें क्षेत्र में खाने की कोशिश करता है।

सेटना और से–ओसिरिस की "बा" रा की नाव के और पीछे नहीं चलीं बल्कि वहीं रुक कर नये मरे हुओं की "का" के पीछे पीछे चल दीं जो एक एक कर के ओसिरिस के न्याय के कमरे में घुस रहीं थीं। दरवाजे पर खड़ा दरबान हर एक से पूछताछ कर रहा था।

दरबान चिल्लाया — "रुक जाओ। मैं तुम्हारा नाम तब तक किसी को जा कर नहीं बताऊँगा जब तक तुम मेरा नाम नहीं जानोगे।"

एक का बोली — "तुम्हारा नाम है दिलों को समझने वाला। तुम्हारा नाम है शरीरों का झाड़ा लेने वाला।[44]"

दरबान ने पूछा — "तो फिर मैं तुम्हारी खबर किसको जा कर दँ?"

"तुमको मेरे आने की खबर दो जमीनों को जानने वाले[45] को देनी चहिये।"

दरबान ने पूछा — "यह दो जमीनों को जानने वाला कौन है?"

"यह अक्लमन्द थौट देवता[46] है।"

इस तरह हर "का" दरवाजे में से गुजर कर अन्दर गयी जहाँ कमरे में थौट उन सबका इन्तजार कर रहा था। उसने कहा —

[44] Understander of Hearts is your name. Searcher of Bodies is your name.
[45] Interpreter of the Two Lands
[46] Thoth – pronounced as Thot, the Wise God

"आओ मेरे साथ आओ। लेकिन फिर भी तुम यहाँ आये ही क्यों हो?"

"का" बोली — "मैं यहाँ घोषित होने के लिये आया हूँ।"

"तुम्हारी क्या हालत है?"

"मैंने कोई पाप नहीं किया।"

"तब मैं तुमको किसको घोषित करूँ? क्या मैं तुमको उसको बताऊँ जिसकी छत आग की है? जिसकी दीवारें ज़िन्दा साँपों की हैं? जिसकी सड़कें पानी की हैं?"

"का" बोली — "हाँ। मुझे तुम उसी को जा कर बताओ क्योंकि वही ओसिरिस है।"

सो वह चिड़िया के सिर वाला थौट उस "का" को वहाँ ले गया जहाँ ओसिरिस अपने सिंहासन पर बैठा था। वह मरे हुए लोगों की ममी[47] को पहनाने वाले वाले कपड़े पहने था। उसके सिर पर ताज था और छाती पर भी कुछ निशान थे।

उसके सामने एक तराजू रखी थी जिस में दो पलड़े लगे थे। गीदड़ के सिर वाला अनूबिस[48], मौत का देवता ओसिरिस, "का" को न्याय के लिये ले जाने के लिये आगे आया।

पर दिल को तौलने से पहले हर मरे हुए आदमी की "का" अपनी सफाई में बोली — "मैंने कोई पाप नहीं किया। मैंने कोई

[47] Mummy is the dead body smeared with special spices and protected for thousands of years.
[48] Anubis is the male jackal god of embalmimg. Horus is his brother.

पाप नहीं किया। मैंने कोई पाप नहीं किया। मैंने कोई पाप नहीं किया।

मेरी पवित्रता तो बैनू चिड़िया यानी फीनिक्स चिड़िया[49] की तरह है जो पत्थर के पेड़ पर यानी हैलियोपोलिस के ओबैलिस्क[50] पर अपना घोंसला बनाती है।"

मेरी तरफ देखो, मैं आपके पास बिना कोई पाप किये, बिना कोई गलती किये, बिना कोई बुरा काम किये, बिना किसी ऐसे आदमी की गवाही के जिसने मुझे कोई बुरा काम करते देखा हो आया हूँ।

मैंने किसी आदमी के खिलाफ कभी कोई काम नहीं किया। मैं सच्चाई पर ही जीता हूँ और सच्चाई का ही खाता हूँ। मैंने वही किया जो लोगों ने कहा और जिससे देवता सन्तुष्ट रहते हैं।

मैंने हर देवता को उसकी पसन्द की चीज़ से सन्तुष्ट किया। मैंने भूखे को खाना खिलाया, प्यासे को पानी पिलाया, नंगे को

[49] Bennu or Phoenix bird – a kind of bird. In Egyptian mythology Bennu is a Solar Sun and is similar to Greek Phoenix bird. In Greek mythology Phoenix bird is a long-lived bird that is cyclically regenerated or reborn. Associated with the Sun, a phoenix bird obtains new life by arising from the ashes of its predecessor. According to some sources, the phoenix dies in a show of flames and combustion, although some other sources claim that the legendary bird dies and simply decomposes before being born again. According to some texts, the phoenix could live over 1,400 years before rebirth.

[50] Obelisk of Haliopolis – obelisk is a kind of stone pillar. See its picture above. They are mostly found in Ethiopia, Egypt and other countries in North-Eastern countries of Africa. This picture is one of several Obelisks of Ethiopia.

कपड़ा पहनाया और उसको नाव दी जो नदी पार नहीं कर सकता था। मैंने देवताओं और पुरखों को भेंट दी।

इसलिये आप मुझे अपैप ड्रैगन से बचाइये जो आत्माओं को खाता है, ओ सॉसों के स्वामी ओसिरिस।"

और फिर वह पल भी आया जिससे वह बुरे काम करने वाला डर रहा था पर भले आदमी ने उसका खुशी से स्वागत किया।

अनूबिस ने उस "का" का दिल लिया जो उसके धरती वाले शरीर के साइज़ से दोगुना था और उसको तराजू के एक पलड़े में रख दिया। तराजू के दूसरे पलड़े में उसने सच्चाई का एक पंख रख दिया।

बुरे काम करने वाले का दिल तो बहुत भारी था सो उसका वह पलड़ा बहुत नीचे हो गया। वह नीचे और और नीचे की तरफ होता गया जब तक कि तराजू का वह पलड़ा इतना नीचे नहीं हो गया कि अमूट[51] जो दिल खाती है उसने उस पलड़े में रखा उसका दिल अपने जबड़े में नहीं रख लिया और खा नहीं लिया।

तब थोट ने उस तराजू की डंडी से बने कोण का नाप लिया।

उस बुरे काम करने वाले को फिर डुऐट के घने अँधेरे में आग के गड्ढे में अपैप ड्रैगन के साथ रहने के लिये घसीट कर ले जाया गया।

[51] Ammut

पर जब अच्छे आदमी की बारी आयी तो वह पंख वाला पलड़ा नीचे की तरफ हो गया और उसका दिल वाला पलड़ा ऊपर हो गया।

थौट ने ओसिरिस और देवताओं से कहा — "इस आदमी ने जो कुछ भी कहा वह सब सच और ठीक है। इस आदमी ने कोई पाप नहीं किया। इसने हमारे साथ कुछ बुरा भी नहीं किया। इसे किसी भी आत्मा को खाने वाले को नहीं खाने नहीं देना चाहिये।

इसको तो ओसिरिस की कभी न नष्ट होने वाली रोटी देनी चाहिये। इसको तो होरस[52] को मानने वालों के साथ शान्ति के मैदानों[53] में जगह मिलनी चाहिये।

इसके बाद होरस ने उस मरे हुए आदमी का हाथ पकड़ा और उसको ओसिरिस के सामने यह कहते हुए ले गया — "ओ ओसिरिस, मैं आपके पास इस नये ओसिरिस को ले कर आया हूँ। इसका दिल तराजू से तौल कर देखा तो यह तो सच बोल रहा था। इसने किसी भी देवता के लिये कोई भी पाप नहीं किया।

थौट ने इसका दिल तौल लिया है और उसने उसको सच्चा पाया। अब आप इसको ओसिरिस की रोटी और बीयर दे दें जैसे कि आप होरस के मानने वालों को देते हैं।"

[52] Horus – the son of Osiris and Isis with the head of a falcon, and the brother of Anubis.
[53] Fields of Peace

ओसिरिस ने हॉ में अपना सिर हिलाया और वह मरा हुआ आदमी खुशी खुशी शान्ति के मैदानों में वहॉ रहने के लिये चला गया। वहॉ वह उन सब चीज़ों का आनन्द लेने लगा जिनको वह अपनी ज़िन्दगी सबसे ज़्यादा पसन्द करता था। उस जगह में उसके लिये सब कुछ था।

वह वहॉ पर तब तक रहा जब तक ओसिरिस उन सबको अपने साथ लेकर धरती पर लौटा जो उसकी जनता के रूप में धरती पर रहने लायक थे।

से–ओसिरिस की "बा" ने अपने पिता सेटना की "बा" को वहॉ यह सब और और भी बहुत कुछ दिखाया और काफी देर तक बात करने के बाद में कहा — "अब तो आप समझ गये होंगे न कि मैंने आपसे यह क्यों कहा था कि आपकी किस्मत इस गरीब आदमी जैसी क्यों होनी चाहिये, न कि उस अमीर आदमी जैसी?

क्योंकि अमीर आदमी वह है जिसकी ऑख में तीसरे दरवाजे का डंडा घूम रहा था पर गरीब आदमी तो अच्छे कपड़े पहन कर हमेशा के लिये शान्ति के मैदानों में रह रहा है। बुरे आदमी की कब्र पर जो भेंटें चढ़ाई जाती हैं वे सब भी उसी को मिल जाती हैं।"

उसके बाद दोनों "बा" ने अपने अपने सुनहरी पंख फैलाये और रात में ही थैबैस वापस आ गये। वहॉ आ कर वे अपने अपने शरीरों में घुस गये जिनकी ओसिरिस के मन्दिर में उनके "का" रखवाली कर रहे थे।

वहॉ आ कर वे फिर से साधारण आदमी बन गये – पिता और उसका बेटा, और वे ठीक समय पर फिर से सूरज को मिस्र के ऊपर कई रंगों में उगता हुआ देख सके।

6 मौत की आवाज[54]

यह सुन्दर कहानी रोमेनिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसकी केवल एक ही इच्छा थी और वह थी अमीर बनने की। दिन रात वह अमीर बनने के अलावा कुछ और सोचता ही नहीं था।

लो एक दिन उसकी इच्छा पूरी हुई और वह अमीर हो गया। अमीर होने पर और अपने पास कितना सारा खोने के लिये पाने पर वह यह सोचने लगा कि इतना सारा पैसा अपने पीछे छोड़ कर अब मरना ठीक नहीं है।

सो उसने अपने दिमाग में कुछ इरादा किया और उसके अनुसार उसने तय किया कि वह यह पता लगाये कि कहीं कोई ऐसी जगह है या नहीं जहॉ मौत न हो।

वह अपनी यात्रा के लिये तैयार हुआ। उसने अपनी पत्नी से विदा ली और चल दिया। जब भी कभी वह किसी नये देश में आता वहॉ उसका पहला सवाल यही होता कि क्या उस देश में कभी कोई मरा था। और जब वह यह सुनता कि वहॉ तो लोग मरते ही रहते हैं तो वह निराश हो कर आगे चल देता।

[54] Voice of the Death – a folktale from Romania, Europe. Taken from the Web Site: https://fairytalez.com/the-voice-of-death/ Taken from : Andrew Lang's Fairy Books

आखिर वह एक ऐसे देश में पहुँचा जहाँ वही सवाल पूछने पर लोगों ने कहा कि वे तो इस शब्द के मायने भी नहीं जानते। तो हमारा यह यात्री यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

वह बोला — "तब तो तुम्हारे देश में बहुत सारे लोग होंगे क्योंकि यहाँ तो कोई मरता ही नहीं है।"

लोग बोले — "नहीं इतने सारे लोग तो नहीं हैं। समय समय पर एक आवाज सुनायी देती है जो पहले एक को पुकारती है फिर दूसरे को। जो कोई वह आवाज सुनता है वह यहाँ से चला जाता है और फिर कभी वापस नहीं आता।"

आदमी ने पूछा — "क्या जिस आदमी का नाम पुकारा जाता है उस आदमी ने कभी उसको देखा है जो उसे पुकारता है या फिर वह केवल आवाज ही सुनता है।"

लोग बोले — "नहीं नहीं वे सुनते भी हैं और उसको देखते भी हैं जो उनको पुकारता है।"

जब उस आदमी ने यह सुना तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये लोग कितने बेवकूफ हैं जो केवल आवाज का कहा मानते हैं जबकि वे जानते हैं कि वे एक बार वहाँ से गये तो वापस नहीं लौटेंगे।

यहाँ से वह अपने घर वापस चला गया। अपना सारा सामान उठाया अपनी पत्नी और बच्चों को लिया और तय किया कि वह उन सबके साथ उसी देश में जा कर रहेगा जहाँ मौत कभी नहीं

आती। बल्कि जहॉ वे एक आवाज सुनते हैं और उस आवाज को सुन कर उसके पीछे पीछे चले जाते हैं जहॉ से वे फिर कभी वापस नहीं लौटते।

क्योंकि उसने अपने मन में यह तय किया हुआ था कि जब उसने या उसके किसी परिवार के आदमी ने यह आवाज सुनी तो वे उस पर कोई ध्यान ही नहीं देंगे चाहे वह कितनी भी ज़ोर से क्यों न पुकारे इसलिये वह निश्चिन्त था।

जब वह अपने नये घर में बस गया और अपना सब सामान ठीक कर लिया तब उसने अपनी पत्नी और परिवार से कहा कि जब तक वे खुद मरना न चाहें उनको उस आवाज को सुन कर उस पर कोई ध्यान देने की जरूरत नहीं है जिसको वे किसी न किसी दिन जरूर सुनेंगे।

कुछ साल तक सब कुछ ठीकठाक चलता रहा। सब अपने नये घर में खुशी से रह रहे थे। लेकिन एक दिन जब वे सब मेज के चारों तरफ बैठे हुए थे उसकी पत्नी यकायक उठ खड़ी हो गयी और ज़ोर से चिल्लायी — "मैं आ रही हूॅ। मैं आ रही हूॅ।"

और उसने अपने फ़र के कोट को ढूॅढना शुरू कर दिया। पर उसका पति उछल उठा। उसने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया और उसे रोकते हुए डॉटते हुए कहा — "क्या तुमको याद नहीं कि मैंने तुमसे क्या कहा था। तुम वहीं रुकी रहो जहॉ तुम हो जब तक तुम मरना न चाहो।"

पत्नी बोली — "अरे तुम सुन नहीं रहे कि वह आवाज मुझे बुला रही है। मैं तो केवल यह देखने जा रही हूँ कि वहाँ मेरी क्या जरूरत है। मैं बस अभी आयी।"

कह कर वह वहाँ जाने के लिये जहाँ वह आवाज उसे बुला रही थी जबरदस्ती अपने पति के हाथ से अपना हाथ छुड़ाने लगी। पर आदमी ने भी उसका हाथ बहुत कस कर पकड़ा हुआ था वह उसको छोड़ नहीं रहा था। उसने घर के दरवाजे खिड़कियाँ सब बन्द करवा दिये थे।

जब पत्नी ने यह देखा तो उसने अपने पति से कहा — "बहुत अच्छे मेरे प्रिय पति। मैं वहीं करूँगी जो तुम कहोगे और वहीं रहूँगी जहाँ मैं हूँ।"

उसके पति ने सोचा कि यह ठीक कह रही है। उसने यह अच्छा सोचा कि उसने उस आवाज को जीत लिया। पर कुछ मिनट बाद ही वह फिर अचानक से एक दरवाजे की तरफ भागी उसे खोला और तीर की तरह से भागी चली गयी। पति उसके पीछे पीछे था।

पति ने उसे उसके फ़र कोट से पकड़ लिया। उससे बहुत विनती की कि वह न जाये क्योंकि अगर एक बार वह चली गयी तो फिर वह उसके पास कभी लौट कर नहीं आयेगी। वह कुछ नहीं बोली उसके हाथ पीछे की तरफ लटक गये। वह खुद अचानक

आगे की तरफ झुक गयी। वह खुद तो अपने कोट में से फिसल गयी और उसका कोट पति के हाथों में ही रह गया।

आदमी बेचारा तो पत्थर सा हो गया जबसे उसने उसे दरवाजे की तरफ भागते हुए देखा और उसको कोट में से निकल जाते हुए देखा। जाते जाते वह चिल्लाती जा रही थी "मैं आ रही हूँ। मैं आ रही हूँ।"

जब वह ऑखों से ओझल हो गयी तब आदमी को होश आया वह बुड़बुड़ाता हुआ अपने घर वापस चला गया "अगर वह इतनी बेवकूफ थी कि जो मरना ही चाहती थी तो मैं क्या कर सकता था।

मैंने उसको चेतावनी भी दी थी उससे विनती भी की थी कि वह उस आवाज की तरफ वह कोई ध्यान न दे चाहे वह कितनी भी ज़ोर से पुकारे पर उसने सुना ही नहीं।"

इस घटना के बाद दिन हफ्ते महीने और साल गुजर गये। घर को परेशान करने वाली फिर ऐसी कोई घटना नहीं घटी। लेकिन एक दिन वह आदमी नाई की दूकान पर था और अपनी हजामत बनवा रहा था। उसकी दूकान में और बहुत सारे आदमी भी थे।

नाई ने उस आदमी की ठोढ़ी पर बस अभी साबुन लगाया ही था कि अचानक वह आदमी कुर्सी से उठ गया और चिल्लाने लगा "मैं नहीं आऊँगा मैं नहीं आऊँगा।"

नाई और दूसरे लोगों ने उसे चिल्लाते हुए सुना तो आश्चर्य में पड़ गये। पर वह फिर से दरवाजे की तरफ देखते हुए चिल्लाया "मैं नहीं आऊँगा। सुना तुमने? मैं नहीं आऊँगा। मैं तुमसे बार बार कह रहा हूँ कि मैं नहीं आऊँगा। चले जाओ यहाँ से।"

पर कुछ मिनट बाद उसने फिर पुकारा तो आदमी फिर चिल्लाया — "चले जाओ यहाँ से वरना इसका नतीजा तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा। तुम मुझे कितना ही पुकारो पर तुम मुझे बुला नहीं पाओगे।"

और वह इतना गुस्सा हो गया कि शायद तुम लोग समझ रहे होगे कि कोई सचमुच में दरवाजे पर खड़ा था और उसको तंग कर रहा था।

आखिर वह कूदा और नाई से रेज़र छीनता हुआ बोला — "मुझे रेज़र दो मैं उसे जा कर सिखाता हूँ कि वह लोगों को यहाँ शान्ति से रहता छोड़ दे।"

वह दूकान से बाहर ऐसे भागा चला गया जैसे किसी के पीछे भाग रहा हो। नाई ने सोच रखा था कि वह अपना रेज़र ऐसे ही नहीं जाने देगा सो वह अपने रेज़र के लिये उसके पीछे पीछे दौड़ा।

दोनों अपनी पूरी रफ्तार से भागे जा रहे थे। भागते भागते वे शहर से बाहर निकल गये और अचानक वह आदमी एक पहाड़ी की चोटी से नीचे गिर गया और फिर कभी नहीं देखा गया।

इस तरह से वह आदमी भी अपनी मर्जी के बगैर उस आवाज के पीछे भागने पर मजबूर हो गया।

नाई सीटी बजाता हुआ अपने आपको बधाई देता हुआ घर पहुँचा कि वह बच गया था। घर जा कर उसने बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

और फिर तो देश विदेशों में सब जगह यह बात फैल गयी कि जो लोग चले गये हैं और फिर वापस नहीं आये हैं वे किसी गड्ढे में जा कर गिर गये हैं। क्योंकि उस समय तक इस बात का किसी को नहीं पता था कि आवाज के पुकारने पर जो लोग जाते थे वे कहाँ जाते थे।

सो शहर के लोगों ने वहाँ जा कर उस गड्ढे को देखने का फैसला किया कि जिसने इतने सारे आदमियों को खा लिया था और फिर भी अभी तक भरा नहीं था। पर वहाँ तो कुछ नहीं था। वहाँ तो दूर दूर तक बड़ा सा मैदान फैला पड़ा था।

ऐसा लग रहा था जैसे वह मैदान वहाँ दुनियाँ बनने के समय से ही ऐसा था। उस दिन के बाद से उस देश में भी लोग सामान्य लोगों की तरह से मरने लगे।

7 मौत के दूत[55]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक राक्षस एक बहुत बड़ी सड़क पर यात्रा कर रहा था कि अचानक से एक अजनबी उसके सामने आ खड़ा हुआ और बोला — "वहीं रुक जाओ एक कदम भी आगे मत बढ़ना।"

राक्षस बोला — "क्या? एक ऐसा आदमी जिसे मैं अपनी उंगलियों में ही मसल सकता हूँ मेरा रास्ता रोकना चाहता है। तू कौन है जो मुझसे इतनी हिम्मत से बात करने की हिम्मत कर रहा है?"

वह आदमी बोला — "मैं मौत हूँ। मुझे कोई नहीं रोक सकता। तुझे भी भी मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिये।"

पर राक्षस ने उसका कहा मानने से इनकार कर दिया और उससे लड़ने लगा। यह एक लम्बी भयानक लड़ाई थी। आखिर राक्षस जीत गया और उसने मौत को घूँसे मार मार कर नीचे गिरा दिया। वह एक पत्थर के पास जा कर गिर गयी।

राक्षस अपने रास्ते चला गया और मौत वहीं हारी हुई पड़ी रही। वह इतनी कमजोर थी कि वहाँ से उठ ही नहीं सकी। उसने सोचा "अब मैं क्या करूँ। अगर मैं यहाँ से नहीं उठी और यही पड़ी रही तो फिर दुनियाँ में कोई नहीं मरेगा और यह दुनियाँ आदमियों

[55] Death's Messengers. A folktale from Germany by Grimm Brothers.

और प्राणियों से इतनी भर जायेगी कि वे आपस में एक दूसरे के पास भी नहीं खड़े हो पायेंगे।"

इस बीच उसे एक नौजवान आता दिखायी दिया जो बहुत ताकतवर और मजबूत था। वह नौजवान कोई गीत गाता चारों तरफ देखता हुआ चला आ रहा था।

जब उसने देखा कि रास्ते में कोई आधा बेहोश सा पड़ा हुआ है तो उसको उस पर दया आ गयी। उसने मौत को उठाया और अपनी शीशी से एक बड़ा सा घूँट पानी का पिलाया और तब तक इन्तजार किया जब तक वह ठीक से होश में नहीं आया।

अजनबी ने उठते हुए कहा — "क्या तू जानता है कि मैं कौन हूँ और तूने किसको अपनी टाँगों पर खड़े होने में सहायता की है?"

नौजवान बोला — "नहीं मैं तुझे नहीं जानता।"

अजनबी बोला — "मैं मौत हूँ। मैं किसी को नहीं छोड़ती और तू कोई इसका अपवाद नहीं है। मैं तुझे भी नहीं छोड़ूँगी। पर तू यह देख सकता है कि मैं तेरी ऋणी हूँ। मैं तुझसे वायदा करती हूँ कि मैं तेरे ऊपर अकस्मात ही नहीं आऊँगी। पहले मैं तेरे पास अपने दूत भेजूँगी और उसके बाद ही तुझे ले कर जाऊँगी।"

नौजवान बोला — "ठीक है। यह तो बड़ी अच्छी बात है कि तेरे आने का मुझे पहले ही पता चल जायेगा और किसी तरह से मैं तुझसे तब तक सुरक्षित रहूँगा।"

इतना कह कर नौजवान भी अपने रास्ते चला गया। वह बहुत हल्का महसूस कर रहा था और अपने आस पास के दृश्यों का आनन्द लेता चला जा रहा था। फिर वह मौत की बात भूल गया।

पर जवानी और तन्दुरुस्ती दोनों बहुत दिनों तक नहीं रहते। जल्दी ही उसे बीमारियों और दुखों ने घेर लिया। इनसे वह दिनों दिन परेशान रहने लगा। उसकी रातों की नींद उड़ गयी।

उसने सोचा "मैं अभी नहीं मरूँगा। मौत ने कहा था कि वह मुझे ले जाने से पहले मेरे पास अपने दूत भेजेगी। पर मेरी यह बहुत बड़ी इच्छा है कि मेरे ये दुख के दिन दूर हो जायें।" जैसे ही वह कुछ अच्छा हो गया उसने फिर से खुशी रहना शुरू कर दिया।

एक दिन किसी ने पीछे से उसका कन्धा थपथपाया। उसने मुड़ कर देखा तो मौत उसके पीछे खड़ी थी। वह बोली — "आओ मेरे पीछे आओ। इस दुनियॉ से तुम्हारे जाने का समय आ गया है।"

आदमी बोला — "क्या तू अपना वायदा तोड़ रही है? क्या तूने यह नहीं कहा था कि मुझे ले जाने से पहले तू मेरे पास अपने दूत भेजेगी? मैंने तो ऐसा कोई तेरा दूत देखा नहीं।"

"चुप। क्या मैंने तेरे पास आने से पहले एक के बाद दूसरा अपना दूत नहीं भेजा? क्या मैंने तेरे पास बुखार नहीं भेजा जिसने तुझे हिला कर रख दिया और बिस्तर में लिटा दिया?

क्या उसने तेरा सिर हिला कर नहीं रख दिया? क्या गठिया ने तेरे जोड़ जोड़ में दर्द नहीं कर दिया? क्या तेरे कान नहीं बजे? क्या दॉतों के दर्द ने तेरे गालों को नहीं सुजा दिया? क्या तेरी ऑखों के सामने अँधेरा नहीं छा गया? इसके अलावा मेरी बहिन नींद ने क्या तुझे रात रात भर तंग नहीं किया?"

वह आदमी इसके जवाब में कुछ नहीं कह सका और मौत को अपनी नियति मान कर उसके पीछे पीछे चल दिया।

8 सिपाही और मौत[56]

सिपाही और मौत रूस की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है जिसमें एक सिपाही मौत को अपने पास कैद में रख लेता है फिर देखो कि वह क्या मजा बॉधता है।

एक बार की बात है कि एक सिपाही था जिसने भगवान और राजा दोनों की पूरे पच्चीस साल तक सेवा की थी और आखीर में उसने केवल तीन बिस्किट कमाये थे। अब वह घर लौट रहा था।

जब वह जा रहा था तो सोचता जा रहा था "भगवान देखो मैं यहॉ हूॅ। मैंने ज़ार की पच्चीस साल तक सेवा की। वहॉ से मुझे खाना और कपड़ा मिलता रहा। पर आखिर मैं किस चीज़ के लिये ज़िन्दा रहा? मैं ठंडा हूॅ और भूखा हूॅ। खाने के लिये मेरे पास केवल तीन बिस्किट हैं।"

इसी तरह से वह सोचता चला आ रहा था कि उसको लगा कि वह वह जगह छोड़ कर कहीं और चला जाये जहॉ भी उसकी किस्मत उसे ले जाये।

चलते चलते उसे एक बहुत ही गरीब भिखारी मिला। उसने उससे भीख मॉगी तो उसने उसे एक बिस्किट दे दिया। वह और

---

[56] The Soldier and Death – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief. 73 Tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in three parts. This story is in its third part.

आगे चला तो उसको एक और गरीब भिखारी मिला। उसने उसको बहुत नीचे तक सिर झुकाया और उससे भीख मॉगी तो उसने उसको भी एक बिस्किट दे दिया। अब उसके पास केवल एक बिस्किट ही बचा था।

वह और आगे चला तो उसको एक तीसरा भिखारी मिला। उसने भी उसको नीचे तक झुक कर नमस्ते की और भीख मॉगी।

सिपाही ने अपना आखिरी तीसरा बिस्किट निकाला और सोचा "अगर मैं इसको यह सारा बिस्किट दे देता हूॅ तो मेरे पास तो कुछ रह ही नहीं जायेगा। और अगर में इसको आधा बिस्किट देता हूॅ तो जब यह अपने दूसरे साथी भिखारियों से मिलेगा तो देखेगा कि उनके पास तो पूरे पूरे बिस्किट हैं तो इसको बुरा लगेगा।

इससे अच्छा तो यही है कि मैं इसे भी पूरा बिस्किट ही दे दूॅ। मैं अपना गुजारा किसी और तरह कर लूॅगा।"

सो उसने उसको अपना तीसरा आखिरी बिस्किट निकाला और उसे दे दिया और अब उसके पास कुछ भी नहीं बचा था।

बिस्किट ले कर उस बूढ़े ने उससे पूछा — "ओ भले आदमी। बता तेरी क्या इच्छा है? तुझे क्या चाहिये? मैं तेरी सहायता करूॅगा।"

सिपाही बोला — "भगवान तुम्हारा भला करे। मैं तुमसे कोई चीज़ कैसे ले सकता हूॅ। तुम तो वैसे ही बूढ़े और गरीब हो।"

बूढ़ा बोला — "तू मेरी गरीबी के बारे में सोचना छोड़। बस तू मुझे यह बता दे कि तुझे क्या चाहिये और मैं तेरी अच्छाई के मुताबिक तुझे वही चीज़ दे दूँगा।"

सिपाही बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये। अगर तुम्हारे पास ताश हों तो बस मुझे रखने के लिये एक जोड़ी ताश दे दो।"

अब यह बूढ़ा तो जीसस क्राइस्ट था जो एक बूढ़े का रूप रखे धरती पर घूम रहा था। बूढ़े ने अपनी छाती वाली जेब में हाथ डाला ताश की एक गड्डी निकाली और उसको देते हुए कहा — "लो यह लो। इन ताशों के साथ तुम जिस किसी के साथ भी खेलोगे तुम वह बाजी जीत जाओगे।

और लो यह एक थैला लो। जो भी तुम्हें रास्ते में मिलेगा चाहे वह जंगली जानवर हो या चिड़िया हो जिसको भी तुम पकड़ना चाहोगे बस इस थैले से यह कहना "ओ चिड़िया या जानवर आ मेरे थैले में कूद जा।" और तुम्हारी इच्छा पूरी हो जायेगी।"

सिपाही ने उसे धन्यवाद कहा और उससे ताश की गड्डी और थैला ले कर आगे चला। वह चलता गया चलता गया और चलता गया, शायद पास शायद दूर, शायद कुछ देर या फिर शायद बहुत देर कि वह एक झील के पास आ पहुँचा। उस झील में तीन जंगली बतखें तैर रही थीं।

अचानक सिपाही को उस बूढ़े भिखारी के दिये हुए थैले की याद आ गयी तो उसने सोचा कि "क्यों न मैं इस थैले को यहीं जॉच कर देख लूँ।"

उसने उसे निकाला खोला और बोला — "ओ जंगली बतखों मेरे थैले में कूद जाओ।" जैसे ही उसके मुँह से ये शब्द निकले तुरन्त ही तीनों बतखें झील से आ कर उसके थैले में गिर गयीं। सिपाही ने अपना थैला बन्द किया और फिर अपने रास्ते चल दिया।

चलते चलते अब वह एक शहर में आ पहुँचा। वहॉ वह एक खाने की जगह गया और वहॉ आ कर उसने सराय के मालिक को एक बतख दी और उससे कहा कि वह उसे उसके लिये खाने में बना दे। "इसकी मजदूरी में मैं तुम्हें एक और बतख दूँगा। और यह तीसरी बतख लो और इसके बदले में मुझे वोदका[57] दे दो।"

इस तरह से सिपाही उस सराय में एक लौर्ड की तरह बैठा। आराम से खाया पिया और भुनी हुई बतख की दावत खायी। अचानक उसको लगा कि वह खिड़की के बाहर झॉक कर देखे।

सो उसने जब उधर देखा तो देखा कि उधर तो एक बहुत बड़ा महल खड़ा हुआ था पर उसका कोई भी शीशा साबुत नहीं था। यह देख कर उसने सराय के मालिक से पूछा — "यह क्या बात है। यह कैसा महल है। यह इतना खाली खाली क्यों है?"

[57] Vodka is a Russian liquor.

सराय का मालिक बोला — "अरे आपको नहीं पता? हमारे ज़ार ने यह महल अपने लिये बनवाया था पर वे इसमें रह ही नहीं सके। अब सात साल से यह ऐसे ही खाली पड़ा हुआ है। कुछ शैतानी आत्माऐं इसमें इसमें रहने वाले को बाहर जाने पर मजबूर कर देती हैं। वे इसमें किसी को रहने ही नहीं देतीं।

हर रात यहाँ कुछ शैतानों की मीटिंग होती है। वे लड़ते हैं झगड़ते हैं नाचते हैं ताश खेलते हैं और हर तरह का बुरा काम करते हैं।"

सो सिपाही वहाँ से उठ कर ज़ार के पास गया और बोला — "योर मैजेस्टी। अगर आपको बुरा न लगे तो मैं एक रात आपके खाली महल में गुजार लूँ।"

ज़ार बोला — "भगवान तुम्हें सुखी रखे। क्या बात कर रहे हो भाई? तुम्हारा मतलब क्या है? तुम्हारे जैसे कई हिम्मत वाले लोगों ने वहाँ रात गुजारने की कोशिश की है पर अभी तक वहाँ से कोई बच कर नहीं आ सका है।"

सिपाही बोला — "योर मैजेस्टी। एक रूसी सिपाही पानी में डूब नहीं सकता आग में जल नहीं सकता। मैंने भगवान और सरकार की पच्चीस साल सेवा की है और उसकी वजह से कभी मरा नहीं। और अब एक रात आपकी नौकरी कर लूँगा तो क्या मैं मर जाऊँगा? नहीं कभी नहीं।"

ज़ार फिर बोला — "फिर भी मैं तुमसे कहे देता हूँ कि जो कोई भी आदमी रात को उस महल में जाता है सुबह को उसकी हड्डियाँ ही मिलती हैं।"

पर सिपाही अपने इरादे का पक्का था बस उसको ज़ार के महल में जाने की इजाज़त चाहिये। ज़ार ने कहा "ठीक है अगर तुम जाना चाहते हो तो जाओ। भगवान तुम्हारी रक्षा करें। तुम वहाँ रात को रहना अगर तुम वहाँ रात को रह लिये तो तुम आजाद हो मैं तुम्हें नहीं रोकूँगा।"

सो सिपाही महल में घुसा और एक बड़े से कमरे में जा कर बैठ गया। उसने अपना थैला और अपनी तलवार निकाल कर रख दी। थैला एक कोने में रख दिया और तलवार एक खूँटी पर टाँग दी।

फिर वह एक कुर्सी पर बैठ गया। अपनी जेब में से तम्बाकू निकाला अपना पाइप सुलगाया और आराम से उसमें से धुँआ छोड़ने लगा।

करीब करीब आधी रात को हमें पता नहीं कहाँ से कई शैतान वहाँ आ गये। कुछ उनमें से दिखायी दे रहे थे कुछ दिखायी नहीं दे रहे थे। वहाँ आ कर उन्होंने खूब हल्ला गुल्ला मचाया। फिर वे जंगली संगीत पर खूब नाचे।

फिर वे चिल्लाये — "अरे तुम्हारी क्या छुट्टी कर दी गयी है। क्या तुम हमारे साथ ताश खेलोगे?"

सिपाही बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। लो ये रहे ताश। आओ शुरू करते हैं।" कह कर उसने अपनी जेब से ताश निकाल कर बॉट दिये।

ताश का खेल शुरू हुआ। एक बाजी खेली गयी तो सिपाही जीत गया। दूसरी बाजी खेली गयी पर फिर वही हुआ। सिपाही जीत गया। शैतानों की कोई भी चाल उनको जिता न सकी। सिपाही सारे पैसे जीतता चला गया। उसने उनके सारे पैसे समेट लिये।

शैतान बोले — "ओ सिपाही रुक जाओ। हमारे पास अभी भी साठ औंस चॉदी और चालीस औंस सोना बाकी है। हम उसे आखिरी बाजी पर लगायेंगे।" कह कर उन्होंने एक शैतान लड़के को चॉदी लाने के लिये भेज दिया।

अब एक नया खेल शुरू हुआ। उस शैतान लड़के ने इधर उधर खूब ताक झॉक की और फिर वापस आ कर बड़े शैतान को बताया "बाबा कोई फायदा नहीं है। अब हमारे पास कुछ नहीं है।"

बाबा ने शैतान लड़के से कहा — "तू जा और जा कर सोना ले कर आ।"

लड़का चला गया और सब जगह सोना ढूँढने लगा। एक गड्ढा पूरा का पूरा खाली कर दिया पर फिर भी वहॉ उसको कुछ भी नहीं मिला। सिपाही ने उनका सब कुछ जीत लिया था।

शैतान लोग इस तरह से अपना सारा पैसा गॅवाने पर बहुत गुस्सा थे सो उन्होंने सिपाही को पीटना शुरू कर दिया और चिल्लाये — "इसको कुचल दो भाइयो इसको खा लो।"

यह सुन कर सिपाही बोला — "देखते हैं कि जब खाने की बात आती है तो किसकी बात जीतती है।" कह कर उसने अपना थैला खोल दिया और उनसे पूछा "यह क्या है?"

वे बोले "यह तो एक थैला है।"

"भगवान के जादू से तुम सब इसमें चले जाओ।"

यह कहते ही सारे शैतान उसमें आ कर गिर गये।

वे इतने सारे थे कि तुम उन्हें गिन भी नहीं सकते। सिपाही ने वह थैला कस कर बन्द किया उसे एक खूँटी पर लटकाया और सोने के लिये लेट गया।

सुबह को ज़ार ने अपनो लोगों को बुलवाया और उनसे कहा — "मेरे पास आओ और मुझे यह देख कर बताओ कि वह सिपाही कैसा कर रहा है। अगर शैतानों ने उसे खा लिया है तो कम से कम मुझे उसकी हड्डियॉ ही ला कर दो।"

वे तुरन्त ही महल गये तो उन्होंने देखा कि सिपाही तो अपना पाइप पीता हुआ खुश खुश इधर उधर घूम रहा है। उन्होंने उससे पूछा — "सिपाही कैसे हो तुम? हम तो तुम्हें यहॉ ज़िन्दा देखने की आशा ही नहीं कर रहे थे। तुम्हारी रात कैसी गुजरी? शैतानों से तुमने कैसा सौदा किया?"

सिपाही बोला — "कौन से शैतान। आओ और अन्दर आ कर देखो मेरे पास कितना सोना चॉदी है। मैंने उन सबको हरा दिया। देखो कितना बड़ा ढेर है यह।"

ज़ार के नौकरों ने जब उसे देखा तो वे तो बहुत आश्चर्य में पड़ गये। सिपाही ने उनसे कहा कि वह उसको दो सोने चॉदी का काम करने वाले सुनार ला कर दें। अपने साथ में वे एक लोहे का हथौड़ा और दूसरे औजार भी ले कर आयें।

वे जल्दी जल्दी भागे भागे सुनार के पास गये और दो सुनारों को लोहे के हथौड़ों और दूसरे औजारों को साथ ले कर तुरन्त ही हाजिर हो गये।

सिपाही बोला — "यह थैला लो और इसको पुराने तरीके से ठोक ठोक कर अच्छी तरह पीटो।"

सुनारों ने उससे वह थैला लिया और आपस में बात की — "उफ़ यह थैला कितना भारी है। इसके अन्दर तो शैतान होने चाहिये।"

तुरन्त ही उसके अन्दर से शैतान चीखे — "ओ हमारे बाप हॉ हॉ हम ही हैं। हमारी सहायता करो।"

बहुत जल्दी ही शैतानों को पता चल गया कि वे इस तरह का व्यवहार सहन नहीं कर सकते थे सो उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — "हमारे ऊपर दया करो। हमको बाहर निकालो ओ सिपाही हमको खुली हवा में सॉस लेने दो।

इस दुनियॉ के आखीर तक हम तुम्हें नहीं भूलेंगे और इस महल के अन्दर भी अबसे कोई शैतान नहीं घुसेगा। हम सबको इसमें घुसने से मना कर देंगे – सबको मानी सबको। हम सबको वहॉ से सौ वर्स्ट[58] दूर रखेंगे।"

यह सुन कर सिपाही ने सुनारों को उनको पीटने से रोक दिया। और जैसे ही उसने थैला खोला सारे शैतान बिना पीछे देखे हुए दौड़ कर वहॉ से नरक भाग गये।

पर सिपाही कोई बेवकूफ नहीं था। जैसे ही वे बाहर निकल कर भाग रहे थे उसने एक बड़े शैतान को उसके पंजों से पकड़ लिया और बोला — "यहॉ आओ। तुम मुझे लिख कर दो कि तुम मेरी हमेशा वफादारी के साथ सेवा करोगे।"

उस शैतानी आत्मा ने उसे अपने खून से यह लिख कर दे दिया और वहॉ से भाग गया।

अपनी पूरी ताकत के साथ सारे शैतान बड़े भी छोटे भी सब एक जलते हुए गड्ढे में चले गये पर उसके बाद उन्होंने अपने उस जलते हुए गड्ढे के चारों तरफ पहरा लगा दिया और उनको कड़ी हिदायत दे दी कि वे सावधानी से वहॉ पहरा दें ताकि वह सिपाही और उसका थैला वहॉ कहीं आस पास भी दिखायी न दें।

[58] Verst is a Russian measure of length. 1 Verst = .66 mile (1.1 Kms)

यह सब कर के सिपाही और ज़ार के नौकर लोग ज़ार के पास आये और सिपाही ने उसको कोई कहानी बतायी कि कैसे वह महल शैतानों से आजाद हुआ।

ज़ार ने सिपाही को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा — "तुम मेरे पास ही रहो। मैं तुम्हें अपने भाई की तरह से रखूँगा।"

सो वह सिपाही अब ज़ार के पास ही रहने लगा। अब उसके पास हर चीज़ बहुतायत में थी। अब तो वह अमीरी में लोट रहा था सो अब उसने सोचा कि अब उसको शादी कर लेनी चाहिये। सो उसने शादी कर ली और भगवान की कृपा से एक साल बाद उसके एक बेटा भी हो गया।

इत्तफाक की बात कि इसके बेटे को बहुत बुरी बीमारी लग गयी – इतनी भयानक कि कोई डाक्टर उसे ठीक नहीं कर सका। वह बीमारी किसी भी डाक्टर की जानकारी में नहीं थी।

तो सिपाही को उस बड़े शैतान का ध्यान आया और उस समझौते के साथ जो उसने उसके साथ किया था कि "मैं हमेशा तुम्हारी वफादारी से सेवा करूँगा।" उसने उसके बारे में सोचा और कहा "मेरा बड़ा शैतान क्या कर रहा है?"

उसके याद करते ही वही बड़ा शैतान वहाँ उसके सामने आ खड़ा हुआ और पूछा — "सरकार आपकी क्या इच्छा है?"

सिपाही बोला — "मेरा छोटा सा बच्चा बहुत बीमार है। क्या तुम जानते हो कि वह कैसे ठीक हो सकता है?"

शैतान ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक गिलास निकाला। उसमें उसने ठंडा पानी डाला और बीमार बच्चे के सिर पर रख दिया और सिपाही से कहा — "यहॉ आओ। इस पानी में देखो।"

सिपाही ने उस पानी में देखा तो शैतान ने पूछा "तुम इसमें क्या देखते हो।"

सिपाही बोला — "मैं यह देख रहा हूँ कि मेरे बेटे के पैरों के पास मौत खड़ी है।"

शैतान बोला — "क्योंकि मौत इसके पैरों के पास खड़ी है इसलिये यह बच जायेगा। अगर मौत इसके सिर पर खड़ी होती तो यह एक दिन भी ज़िन्दा नहीं रहता।"

सो शैतान ने पानी का वह गिलास लिया और उसका पानी सिपाही के बेटे के ऊपर डाल दिया।उसका बेटा उसी समय ठीक हो गया।

सिपाही बोला — "तुम यह गिलास मुझे दे दो फिर मैं तुम्हें किसी भी बात के लिये परेशान नहीं करूँगा।" शैतान ने उसको गिलास दे दिया और सिपाही ने उसे समझौते वाला कागज दे दिया। शैतान वहॉ से चला गया।

अब सिपाही को जादू आ गया तो वह बड़े बड़े लोगों को ठीक करने लगा। वह उनके पास जाता गिलास उनके सिर पर रखता और तुरन्त ही जान लेता कि वह आदमी मरेगा या बचेगा।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि ज़ार खुद बीमार हो गया तो सिपाही को बुलवाया गया। सो उसने गिलास में ठंडा पानी भरा और ज़ार के सिर के ऊपर रखा तो देखा कि मौत तो ज़ार के सिर पर खड़ी है।

सिपाही बोला — "योर मैजेस्टी। इस दुनियॉ में कोई ऐसा नहीं है जो आपको ठीक कर सके। मौत आपके सिर पर खड़ी है और अब आपके पास केवल तीन घंटे की ज़िन्दगी ही बची है।"

जब ज़ार ने यह सुना कि उसके पास केवल तीन घंटे की ज़िन्दगी है तो वह सिपाही पर बहुत गुस्सा हो गया।

वह उस पर चिल्ला कर बोला "क्या क्या? तुमने कितने सारे लोगों को ठीक किया है और तुम मेरे लिये कुछ नहीं कर सकते। क्या तुम जानते हो कि मैं तुम्हें अभी इसी वक्त मरवा सकता हूँ?"

सो सिपाही ने सोचा और सोचा और सोचा कि उसे क्या करना चाहिये। बहुत सोचने के बाद उसने मौत को ललकारा — "ओ मौत तू ज़ार को मेरी ज़िन्दगी दे दे और उनकी बजाय मुझे ले ले। क्योंकि अब मेरे लिये यह कोई मायने नहीं रखता कि मैं मरूँ या जियूँ। क्योंकि बजाय यह बेरहम सजा भुगतने के मेरे लिये वही ज़्यादा अच्छा होगा कि मैं अपनी मौत मरूँ।"

यह कह कर उसने फिर से गिलास में देखा तो देखा कि मौत ज़ार के पैरों के पास खड़ी हुई है। फिर उसने गिलास का पानी

लिया और ज़ार के ऊपर छिड़क दिया। ज़ार बिल्कुल ठीक हो गया।

यह कर के सिपाही बोला — "अब ओ मौत। तू मुझे तीन घंटे की मोहलत दे ताकि मैं अपने घर जा सकूँ और अपनी पत्नी और बेटे से विदा ले सकूँ।"

मौत बोली — "ठीक है जा तुझे तीन घंटे दिये।"

घर पहुँच कर सिपाही अपने बिस्तर पर लेट गया और बीमार पड़ गया और जब मौत उसके बिल्कुल पास खड़ी थी तो उसने सिपाही से कहा — "ओ सिपाही तू अब अपने परिवार से विदा कह ले। इस दुनियाँ में रहने के लिये तेरे पास अब केवल तीन मिनट बचे हैं।"

यह सुन कर सिपाही ने अपने तकिये के नीचे से अपना थैला निकाला उसे खोला और मौत से पूछा "यह क्या है?"

मौत बोली "एक थैला।"

सिपाही तुरन्त बोला — "अगर यह एक थैला है तो आजा इसमें कूद जा।" और मौत तुरन्त ही उस थैले में चली गयी।

सिपाही तो बीमार था फिर भी वह अपने बिस्तर से कूद कर उठ गया। थैले को कस कर बन्द किया अपने कन्धे पर डाला और ब्रियान्स्की[59] जंगल चल दिया। यह सबसे घना जंगल था। वहाँ ले

[59] Bryanski Woods

जा कर उसने उस थैले को एक ऐस्पन के पेड़ पर उसकी सबसे ऊँची शाख पर टॉग दिया और घर चला गया।

उस दिन के बाद से दुनियॉ में कोई नहीं मरा। लोग पैदा तो होते थे और पैदा होते भी रहे पर वे मरे कभी नहीं। इस तरह से कई साल बीत गये। सिपाही ने अपना वह थैला वहॉ से उतारा नहीं और धरती पर कोई मरा नहीं।

एक दिन वह शहर गया तो उसको वहॉ एक बहुत ही बूढ़ी औरत मिली। वह इतनी बुढ़िया थी कि जिस तरफ भी हवा चलती थी वह उधर ही को झुक जाती थी। सिपाही के मुँह से निकला "ओह यह कितनी बूढ़ी है। यह अभी तक ज़िन्दा है अब तो इसके मरने का भी समय आ गया।"

बुढ़िया बोली — हॉ। मेरे मरने का समय आया था पर उस बात को तो बहुत दिन बीत गये अब तो वह चला भी गया। उस समय जब तुमने मौत को अपने थैले में बन्द किया था मेरी ज़िन्दगी का केवल एक घंटा रह गया था।

मैं कुछ आराम पा कर बहुत खुश होती। पर जब तक मैं मरूँगी नहीं तब तक यह जमीन भी मुझे नहीं लेगी और ओ सिपाही तू भगवान की नजरों में पापी ठहराया जायेगा। क्योंकि इस धरती पर कोई भी ऐसा आदमी इतना दुखी नहीं है जितनी कि मैं।"

सिपाही वहीं रुक गया और सोचने लगा "यह ज़्यादा अच्छा होगा अगर मैं मौत को बाहर निकाल दूँ। हो सकता है कि मैं भी मर जाऊँ। इसके अलावा मेरी आत्मा पर बहुत सारे पाप भी तो हैं।

इसलिये जब तक मैं ताकतवर हूँ मेरे लिये यही ज़्यादा अच्छा रहेगा कि मैं इस धरती पर रहते हुए उनका बोझ सहूँ। क्योंकि जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तब तो मेरे लिये किसी दुख को सहना और भी मुश्किल हो जायेगा।"

सो वह वहाँ से ब्रियान्स्की जंगल पहुँचा और उसी ऐस्पन के पेड़ के पास पहुँचा जहाँ उसने अपना थैला लटकाया था। उसने देखा कि उसका थैला तो उस पेड़ पर बहुत ऊँचा लटका हुआ था। चारों तरफ से हवा उसको अपने थपेड़ों से बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला रही थी।

उसने पूछा — "ओ मौत क्या तुम अभी तक ज़िन्दा हो?"

थैले में से एक बहुत ही धीमी सी आवाज आयी "हाँ पिता जी मैं अभी भी ज़िन्दा हूँ।"

सो सिपाही ने उस थैले को उतारा उसे खोला और उसमें से मौत को बाहर निकाल दिया। वह खुद अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने अपनी पत्नी और बेटे को विदा कहा और फिर मौत से प्रार्थना की कि वह उसको अपने अन्दर समेट ले।

पर वह तो अपने पैरों की पूरी ताकत के साथ बाहर की तरफ यह कहती हुई भाग गयी "जाओ तुमको तो शैतान ही मारेंगे। मैं तुम्हें नहीं मारूँगी।"

इस तरह सिपाही ज़िन्दा रहा और तन्दुरुस्त रहा। फिर उसने सोचा कि "क्या मैं खुद ही उस जलते हुए गड्ढे की तरफ जाऊँ क्योंकि तब वे शैतान मुझे गन्धक में फेंक देंगे जब तक मेरे पाप पिघल कर न बह जायें।"

सो उसने फिर से सबसे विदा ली अपना थैला उठाया और सीधा जलते हुए गड्ढे की तरफ चल दिया। वह चलता गया चलता गया, शायद पास शायद दूर, शायद पहाड़ी पर चढ़ता हुआ या फिर पहाड़ी से उतरता हुआ, शायद थोड़ी देर तक या फिर ज़्यादा देर तक।

अन्त में वह ऐबिस[60] तक आ पहुँचा। उसने देखा कि वहाँ उसके चारों तरफ तो बहुत सारे पहरेदार खड़े हैं। जब वह उसके फाटक पर पहुँचा तो एक शैतान ने पूछा "कौन आ रहा है?"

"एक अपराधी आत्मा दुख पाने के लिये।"

"तुम यहाँ क्यों आये हो? और तुम्हारे पास यह क्या है?"

"एक थैला।"

यह सुने ही शैतान अपनी पूरी ताकत से चीखा जिसने आस पास की जगह को हिला कर रख दिया। सारी शैतानी आत्माऐं खड़े

[60] Abyss – a deep or seemingly bottomless chasm

हो कर अपने न टूटने वाली चटकनियों वाली खिड़कियों से फाटक के बाहर झॉकने लगीं।

सिपाही ने उस जलते हुए गड्ढे का एक चक्कर लगाया और उस गड्ढे के मालिक को पुकारा — "मेहरबानी कर के मुझे अन्दर घुसा लो। मैं तुम्हारे पास अपने पापों की सजा भुगतने के लिये आया हूँ।"

"नहीं मैं तुम्हें अन्दर नहीं आने दूँगा। तुम्हारी जहॉ इच्छा हो वहॉ चले जाओ। यहॉ तुम्हारे लिये कोई जगह नहीं है।"

"ठीक है अगर तुम मुझे सजा नहीं भुगतने देते तो कम से कम मुझे तुम दो सौ आत्माऐं ही दे दो। मैं उनको भगवान के पास ले जाऊँगा। तब भगवान शायद मेरे पापों को माफ कर दें।"

गड्ढे के मालिक ने कहा — "मैं तुम्हें पचास आत्माऐं और दूँगा बस तुम यहॉ से चले जाओ।"

उसने दो सौ पचास आत्माऐं गिन कर उनको अपने पिछले दरवाजे से उस सिपाही को देने का हुक्म दिया ताकि वह उसे देख न सके। सिपाही ने वे दो सौ पचास अपराधी आत्माऐं इकट्ठी कीं और उनको ले कर वह स्वर्ग के दरवाजे पर पहुँचा।

अपोसिल्स[61] ने उसको देखा और जीसस से कहा — "एक सिपाही या कोई और नरक की दो सो पचास आत्माओं के साथ यहॉ आया हुआ है।"

जीसस ने कहा — "उन आत्माओं को स्वर्ग में ले जाओ पर उस सिपाही को वहॉ मत ले जाना।"

पर सिपाही ने अपना थैला एक अपराधी आत्मा को दे रखा था और उससे कह रखा था — "तुम यहॉ देखते रहना। जैसे ही तुम स्वर्ग में घुसो वैसे ही तुम कहना "ओ सिपाही थैले के अन्दर कूद जाओ।"

स्वर्ग के दरवाजे खुले और उन आत्माओं ने स्वर्ग में घुसना शुरू किया। यह अपराधी आत्मा भी अन्दर गयी जिसके हाथ में सिपाही का थैला था पर स्वर्ग जाने की खुशी में वह सिपाही को उस थैले के अन्दर रखना भूल गया।

इस तरह से सिपाही बाहर ही पीछे छूट गया और दोनों में से किसी भी जगह अपना घर नहीं पा सका। वह बहुत दिनों तक ऐसे ही इधर उधर घूमता रहा क्योंकि उसको अभी दुनियॉ में और भी रहना था।

बहुत दिनों बाद जा कर वह मरा।

[61] Jesus had twelve disciples. Those twelve disciples were called Apostles. Their names are given at the back of this book

9 एक दर्जी स्वर्ग में[62]

मौत की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जर्मनी देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन ऐसा हुआ कि भगवान ने अपने बागीचे में घूमने का विचार किया सो उन्होंने अपने सारे अपोसिल्स और सेन्ट को तो साथ ले लिया और केवल सेन्ट पीटर को स्वर्ग में अकेला छोड़ दिया।

भगवान ने सेन्ट पीटर से कहा कि वह उनकी गैरहाजिरी में किसी को स्वर्ग में न घुसने दे। यह कह कर भगवान तो चले गये और पीटर स्वर्ग के दरवाजे पर पहरा देने लगे।

कुछ ही देर में किसी ने दरवाजा खटखटाया तो सेन्ट पीटर ने पूछा कि वह कौन था और उसे क्या चाहिये था। किसी ने मीठी आवाज में जवाब दिया — "मैं एक गरीब ईमानदार दर्जी हूँ और अन्दर आने की इजाज़त चाहता हूँ।"

पीटर बोले — "हॉ हॉ तुम तो सचमुच ही बड़े ईमानदार हो जैसे चोर फॉसी पर ईमानदार होता है। तुम्हारी उँगलियॉ तो बहुत ही चिपकने वाली हैं। तुमने तो दूसरों के कितने कपड़े चोरी किये हैं। तुमको स्वर्ग में जाने की इजाज़त नहीं मिल सकती।

[62] The Tailor in Heaven – a fairy tale from Germany. By Jacob and Wilhelm Grimm, in "Children's and Household Tales". (Tale No 35). 7th ed. 1857. Translated by DL Ashliman. Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm035.html

जब तक मालिक बाहर हैं उन्होंने मुझे किसी को भी अन्दर आने देने के लिये मना किया है।"

दर्जी बेचारा रो रो कर बोला — "मेरे ऊपर दया करो। अगर कपड़े के छोटे छोटे टुकड़े मेरी मेज के ऊपर से नीचे गिर गये तो उनको चोरी करना नहीं कहते। उनकी तो बात भी नहीं करनी चाहिये।

ज़रा देखो तो, मैं यहाँ लँगड़ा रहा हूँ। चलते चलते मेरे पैरों में छाले पड़ गये हैं। अब मैं धरती पर फिर से वापस नहीं जा सकता। मेहरबानी कर के बस मुझे अन्दर आने दो मैं यहाँ का सारा छोटा मोटा काम कर दिया करूँगा।

मैं बच्चों की देखभाल करूँगा। उनकी नैपी धोऊँगा। उनके खेलने की बैन्चें धोऊँगा फिर उनको साफ करूँगा और उनके सारे फटे कपड़ों की मरम्मत करूँगा।"

यह सब सुन कर सेन्ट पीटर को उस दर्जी पर दया आ गयी और उसने उस दर्जी के लिये स्वर्ग का दरवाजा केवल उतना ही खोला जितने में उस दर्जी का पतला दुबला शरीर अन्दर आ सके।

पीटर ने उसको दरवाजे के पीछे एक कोने चुपचाप में बैठ जाने के लिये कहा ताकि मालिक[63] जब आयें तो उसको देख न पायें और गुस्सा भी न हों।

[63] Translated for the word "Lord" – means Jesus Christ

दर्जी ने उसका कहा मान लिया और दरवाजे के पीछे छिप कर बैठ गया।

पर एक बार जब पीटर दरवाजे के बाहर निकला तो वह अपनी जगह से उठा और अपनी उत्सुकतावश स्वर्ग का कोना कोना देख आया कि वहॉ क्या क्या था।

आखीर में वह एक ऐसी जगह आया जहॉ बहुत सारी बहुत सुन्दर कीमती कुर्सियॉ पड़ी हुई थीं। उनके बीच में एक सीट रखी थी जो खालिस सोने की बनी हुई थीं और जिस पर बहुत सारे कीमती पत्थर जड़े हुए थे।

वह दूसरी कुर्सियों के मुकाबले में काफी ऊॅची जगह रखी हुई थी। उसके आगे पैर रखने के लिये सोने का एक नीचा स्टूल रखा हुआ था। इस कुर्सी पर मालिक बैठते थे जब वह घर में होते थे। इस कुर्सी पर बैठ कर वह धरती पर होती हुई सब चीज़ देख सकते थे।

पहले तो वह दर्जी वहॉ खड़ा खड़ा बहुत देर तक मालिक की उस कुर्सी की तरफ देखता रहा क्योंकि वह कुर्सी उसको दूसरी कुर्सियों के मुकाबले में बहुत अच्छी लग रही थी।

पर फिर उससे रहा नहीं गया और वह उस पर चढ़ कर बैठ ही गया। अब क्या था अब तो वह वहॉ से धरती पर होती हुई सब चीज़ें देख पा रहा था।

वहॉ से उसने एक बदसूरत सी बुढ़िया देखी जो एक नदी के पास खड़ी थी और कपड़े धो रही थी। उसने उन कपड़ों में से दो स्कार्फ निकाल कर एक तरफ रख लिये।

यह देख कर दर्जी को इतना गुस्सा आया कि उसने पास में रखा वह पैर रखने वाला सोने का स्टूल उठाया जिस पर भगवान अपने पैर रखा करते थे जब वह उस कुर्सी पर बैठते थे और उसे स्वर्ग से धरती पर खड़ी बुढ़िया की तरफ फेंक दिया।

स्टूल धरती पर चला गया। उसने देखा कि अब तो वह उस स्टूल को वापस नहीं ला सकता था सो वह चुपचाप उस बड़ी वाली कुर्सी से नीचे उतरा और दरवाजे के पीछे जहॉ वह पहले बैठा हुआ था वहीं जा कर बैठ गया और ऐसा दिखाने लगा जैसे कि उसने कुछ किया ही नहीं।

जब मालिक अपने नौकरों को साथ ले कर वापस लौटे तो उनको दरवाजे के पीछे बैठा हुआ दर्जी दिखायी नहीं दिया पर जब वह अपनी उस बड़ी कुर्सी पर बैठे तो उन्होंने देखा कि उनका पैर रखने वाला स्टूल तो अपनी जगह पर था ही नहीं।

उन्होंने सेन्ट पीटर को बुलाया और उससे पूछा कि वहॉ से वह स्टूल कहॉ गया पर उसको तो उसका कुछ पता ही नहीं था।

फिर मालिक ने पूछा — "क्या तुमने किसी को यहॉ अन्दर आने दिया था?"

पीटर बोला — "मुझे तो किसी का पता नहीं कि यहॉ कोई आया था सिवाय एक लॅगड़े दर्जी के जो अभी भी दरवाजे के पीछे बैठा हुआ है।"

मालिक ने उस लॅगड़े दर्जी को अपने सामने बुलवाया और उससे पूछा कि क्या वह स्टूल उसने लिया है और अगर हॉ तो उसने वह कहॉ रखा है।

वह दर्जी खुश हो कर बोला — "गुस्से में मैंने वह स्टूल धरती पर खड़ी एक बुढ़िया पर फेंक दिया क्योंकि उस बुढ़िया ने कपड़े धोते समय दो स्कार्फ चुरा लिये थे।"

मालिक बोले — "ओ गधे, अगर मैं तुम्हारी तरह से न्याय करूँ तो तुम्हारे साथ क्या हो? और अगर मैं हर पापी पर इस तरह से सारी चीज़ें नीचे फेंक दूँ तो मेरे पास तो न कोई कुर्सी रहे, न बैन्च रहे और न ही कुछ और रहे।

तुम अब स्वर्ग में नहीं रह सकते। अब तुमको धरती पर नीचे जाना ही पड़ेगा। वहॉ पर जहॉ तुम जाओगे वहीं से सब कुछ देखते रहना। यहॉ कोई भी सजा से बच नहीं सकता सिवाय मेरे।"

पीटर को उस दर्जी को स्वर्ग से बाहर निकालना पड़ा। और क्योंकि उसके जूते घिस कर फट गये थे, उसके पैरों में छाले पड़ गये थे, सो उसने एक छड़ी उठायी और इन्तजार करने वालों की जगह में जा कर बैठ गया जहॉ कुछ अच्छे सिपाही बैठे थे और खुशियॉ मना रहे थे।

10 गौडफ़ादर मौत[64]

एक बार की बात है एक बहुत ही गरीब आदमी था। उसके बारह बच्चे थे। वह बेचारा दिन रात काम कर के उनके लिये कुछ जुटा पाता था। सो जब उसके यहॉ तेरहवॉ बच्चा आया तो उसको पता ही नहीं था कि वह अब उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिये क्या करे।

वह दौड़ कर बाहर सड़क पर चला गया ताकि वह किसी पहले आदमी से पूछ सके कि वह अब क्या करे। खुशकिस्मती से उसे एक आदमी मिल गया जो गौडफ़ादर था।

सो पहला आदमी जो उसको मिला वह हमारे लौर्ड थे जिनको यह बात पहले से ही पता थी कि उसके मन में क्या था। भगवान ने उससे पूछा — "ओ गरीब आदमी। मुझे तुम्हारे ऊपर दया आती है। जब तुम अपने बच्चे का बैप्टाइज़ेशन कराओगे तो मैं तुम्हारे बच्चे को पकड़ लूँगा। उसकी देखभाल करूँगा। और उसको धरती पर खुश रखूँगा।"

यह सुन कर आदमी ने पूछा "आप कौन हैं।"

"मैं भगवान हूँ।"

---

[64] "The Godfather Death". by Grimms Brothers. (Tale No 44). 1812. Taken from the Web Site : http://www.pitt.edu/~dash/grimm044.html
"Godfather Death" story has been written by Widter-Wolf also, (Tale No 3), and is found in Sicily and Venice. Its Venice version "Sahi Aadmi" (The Just Man) is given in my book "Italy kI Lok Kathaon Mein Isai Dharm" available from : hindifolktales@gmail.com

आदमी बोला — "तब मैं यह नहीं चाहता कि आप उसके गौडफ़ादर बनें क्योंकि आप तो अमीरों को देते हैं और गरीबों को भूखा मारते हैं।"

वह आदमी इसलिये ऐसा बोला क्योंकि वह यह बात नहीं जानता था कि भगवान कितनी अक्लमन्दी से अमीरी और गरीबी का बॅटवारा करते हैं। वह उनकी तरफ से पलटा और दूसरी ओर चला गया।

उसके बाद उसके पास शैतान आया और उससे पूछा — "आप इधर उधर क्या ढूँढ रहे हैं। अगर आप मुझे अपने बच्चे का गौडफ़ादर बना लेंगे तो मैं उसको बहुत सारा सोना दूँगा और दुनियॉ की सारी खुशियॉ दूँगा।"

आदमी ने उससे भी पूछा — "आप कौन हैं।"

"मैं शैतान हूँ।"

आदमी बोला — "तब मैं यह नहीं चाहता कि आप उसके गौडफ़ादर बनें क्योंकि आप तो लोगों को बहकाते हैं और उन्हें भटकाते हैं।"

सो वह और आगे चल दिया। आगे जा कर उसे पतली दुबली टॉगों पर कॉपती हुई मौत दिखायी दी। वह उस आदमी के पास आयी और बोली — "आप मुझे अपने बच्चे का गौडफ़ादर बना लीजिये।"

आदमी ने उससे भी पूछा — "आप कौन हैं।"

"मैं मौत हूँ जो सबको बराबर का बनाती हूँ।"

आदमी बोला — "तब आप ही मेरे बच्चे का गौडफ़ादर बनने के लायक हैं। आप तो बिना किसी भेद भाव के गरीब अमीर सबको ले जाती हैं। आप ही मेरे बच्चे के गौडफ़ादर बन जाइये।"

मौत बोली — "मैं आपके बच्चे को अमीर और मशहूर बना दूँगी क्योंकि जो मेरा दोस्त है वह कभी अपनी ज़िन्दगी में असफल नहीं होता।"

आदमी बोला — "ठीक है। अगले रविवार को मेरे बच्चे का बैप्टाइज़ेशन है आना न भूलियेगा और समय पर आ जाइयेगा।"

अब जैसा कि उसने वायदा किया था मौत उस दिन नियत समय पर आ गयी और बच्चे की गौडफ़ादर बन गयी।

जब बच्चा बड़ा हो गया तो एक दिन मौत उसके सामने आयी और उससे कहा कि वह उसके साथ चले। वह उसको बाहर एक जंगल में ले गयी और वहाँ उसको वहाँ उगी हुई एक जड़ी बूटी दिखायी और बोली — "अब तुम्हें अपने गौडफ़ादर की भेंट मिलेगी। मैं तुम्हें एक बहुत ही मशहूर डाक्टर बना दूँगी। जब कभी कोई बीमार आदमी तुमको बुलायेगा तो मैं तुम्हारे सामने प्रगट हो जाऊँगी।

अगर मैं तुम्हें बीमार आदमी के सिर की तरफ दिखायी दूँ तो तुम उसके बारे में यह पूरे विश्वास के साथ कह सकते हो कि तुम

उसे बिल्कुल ठीक कर दोगे। उसके बाद तुम उसे यह वाली जड़ी बूटी देना और वह ठीक हो जायेगा।

पर अगर मैं तुम्हें उसके पैरों की तरफ खड़ी दिखायी दूँ तो समझना कि वह बीमार मेरा है और तुम उसके बारे में यह कहना कि "यह आदमी अब लाइलाज है और अब इसे दुनियॉ का कोई डाक्टर नहीं बचा सकता।" पर मेरी इजाज़त के बिना मेरी दी हुई जड़ी बूटी किसी को देने में सावधानी बर्तना वरना तुम्हारा बहुत बुरा होगा।

अब यह सब हुए बहुत दिन नहीं बीते थे कि वह आदमी तो बहुत बड़ा डाक्टर बन गया। लोग अब उसके बारे में यही कहते थे कि "उसको तो बस बीमार के पास खड़े होने की जरूरत है और बस वह उसकी सारी हालत जान जाता है।"

दूर से और पास से सभी जगहों से लोग उसके पास आने लगे और वह उसे अपने बीमार लोगों को दिखाने के लिये अपने साथ ले जाने लगे। वे उसे बहुत सारे पैसे देते और अब वह एक बहुत ही अमीर आदमी बन गया था।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि उस देश का राजा बीमार पड़ा तो हमारा मशहूर डाक्टर वहॉ बुलाया गया और उससे यह पूछा गया कि उसकी बीमारी ठीक होने की क्या आशा थी। डाक्टर ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। मौत उसके पैरों की तरफ खड़ी थी इसलिये कोई भी जड़ी बूटी उसकी बीमारी पर काम नहीं कर सकती थी।

डाक्टर ने सोचा "अगर मैं मौत को एक बार धोखा देने की कोशिश करूँ? वह मुझसे नाराज तो होगी पर क्योंकि मैं उसका गौडसन हूँ तो हो सकता है कि मेरी तरफ से वह अपनी एक ऑख बन्द कर ले। मैं यह खतरा मोल लेना चाहता हूँ।"

सो उसने राजा को उठाया और उसको दूसरी तरफ से लिटा दिया यानी उसका सिर पैर की तरफ कर दिया और पैर सिर की तरफ कर दिये। इससे अब मौत उसके सिर की तरफ खड़ी थी।

डाक्टर ने अब राजा को मौत की दी हुई जड़ी बूटी दे दी। राजा ठीक हो गया और फिर से पहले जैसा तन्दुरुस्त हो गया।

खैर मौत डाक्टर के पास आयी। उसने अपना चेहरा काला और गुस्से वाला बना रखा था। उसने उँगली उठा कर उसको धमकाया — "तुमने मुझे धोखा दिया? इस बार तो मैं तुम्हें जाने देती हूँ क्योंकि तुम मेरे गौडसन हो पर अगर तुम दोबारा ऐसा कुछ करोगे तो तुम्हें अपनी ज़िन्दगी देनी पड़ेगी। मैं तुम्हें अपने साथ यहॉ से दूर ले जाऊँगी।"

जल्दी ही राजा की बेटी बीमार पड़ी। वह राजा का अकेला बच्चा थी। राजा उसके लिये रात दिन रोता रहता। ऐसा लगता था जैसे रोते रोते वह अन्धा ही हो जायेगा। उसने यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई भी उसकी बेटी को अच्छा करेगा वह अपनी बेटी उसको दे देगा और फिर अपना ताज भी दे देगा।

जब डाक्टर लड़की को देखने के लिये आया तो मौत उसके पैरों की तरफ खड़ी थी। उसको अपने गौडफ़ादर की चेतावनी याद रखनी चाहिये थी पर वह तो राजकुमारी की सुन्दरता के जादू में इतना फॅस चुका था कि वह तो अब उसका पति बनने का सपना देखने लगा था। सो उसने अपने सारे विचार उड़ा दिये।

उसने यह नहीं देखा कि मौत सामने खड़ी उसके ऊपर गुस्सा हो रही थी। उसका हाथ हवा में ऊपर उठा हुआ था और वह अपनी मुट्ठी से उसको धमका रही थी।

लड़के ने फिर से वैसा ही किया जैसा कि उसने राजा के साथ किया था। उसने राजकुमारी का सिर उसके पैरों की तरफ कर दिया और उसके पैर उसके सिर की तरफ कर दिये।

उसके बाद उसने मौत की दी हुई जड़ी बूटी उसको दे दी। राजकुमारी का गालों का रंग तुरन्त ही वापस लौटने लगा और उसके शरीर में जान पड़ गयी।

जब मौत ने देखा कि उसका गौडसन एक बार फिर से उसकी चीज़ लिये जा रहा है तो वह लम्बे लम्बे कदम उठाती हुई डाक्टर की तरफ बढ़ी और बोली — "बस अब तुम खत्म। अब तुम्हारी बारी है।"

मौत ने उसे अपने बर्फ जैसे ठंडे हाथों से इतनी ज़ोर से पकड़ा कि वह अपने आपको उसकी पकड़ से न छुड़ा सका और वह उसको धरती के नीचे की तरफ एक गुफा में ले कर चल दी।

वहॉ पहुँच कर डाक्टर ने देखा कि वहॉ तो बहुत सारी मोमबत्तियॉ अनगिनत लाइनों में जल रही थीं। उनमें कुछ बड़ी थी कुछ बीच के साइज़ की थीं और कुछ छोटी थीं। हर पल कोई न कोई मोमबत्ती बुझ रही थी जबकि दूसरी जलायी जा रही थी। इस तरह छोटी छोटी लपटें इधर उधर बराबर नाचती कूदती नजर आ रही थीं।

मौत बोली — "देखो ये सब लोगों की ज़िन्दगियों की रोशनियॉ हैं। बड़ी बड़ी रोशनियॉ बच्चों की हैं। बीच के साइज़ की रोशनियॉ शादीशुदा लोगों की है जो इस समय आनन्द भोग रहे हैं। और छोटी रोशनियॉ बूढ़ों की होती हैं। कभी कभी बच्चों और जवानों की रोशनियॉ छोटी भी होती हैं।"

डाक्टर ने यह सोचते हुए कि उसकी ज़िन्दगी की रोशनी तो अभी लम्बी होगी मौत से पूछा — "और मेरी ज़िन्दगी की रोशनी कहॉ है।"

मौत ने एक छोटे से टुकड़े की तरफ इशारा करते हुए दिखाया कि यह तुम्हारी ज़िन्दगी की रोशनी है। वह रोशनी तो बुझने वाली हो रही थी।

डाक्टर तो उसे देख कर घबरा गया। वह उसे देख कर चिल्लाया — "ओ मेरे गौडफ़ादर। मेरे लिये एक नयी रोशनी जलाओ। मेरे ऊपर मेहरबानी करो ताकि मैं अपनी ज़िन्दगी आनन्द

से जी सकूँ। मैं राजकुमारी का पति बन सकूँ और फिर राजा बन सकूँ।"

मौत बोली — "अफसोस मैं यह नहीं कर सकती। आदमी को पहले यहाँ से बाहर जाना पड़ता है तभी उसके लिये नयी रोशनी जल सकती है।"

"तो यह पुरानी वाली रोशनी एक नयी वाली रोशनी पर लगा दो। इससे पुरानी वाली ही जलती रहेगी।"

मौत ने ऐसा दिखाया कि जैसे वह ऐसा करने जा रही थी पर उसने ऐसा किया नहीं। उसने एक बड़ी मोमबत्ती ली पर उससे बदला लेने के लिये उसने जान बूझ कर उसे दोबारा जलाने में गलती कर दी। वह छोटा टुकड़ा नीचे गिर पड़ा और बुझ गया।

डाक्टर भी तुरन्त ही जमीन पर गिर पड़ा और अब वह भी मौत के हाथों में था।

11 ताश खेलने वाला–1[65]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के पूर्व में स्थित टापुओं पर बसे लोगों में कही सुनी जाती है। ताश खेलने वाले की यह लोक कथा एक बहुत ही मजेदार लोक कथा है। इसमें जीसस एक ताश खेलने वाले को वरदान दे कर कैसे फॅस जाते हैं यह देखने वाली बात है। तो आओ पढ़ते हैं यह कथा हिन्दी में।

एक बार एक आदमी था जिसको लोग ताश खेलने वाला कहते थे और यही वह करता भी था। वह कहीं भी जाता था तो उसकी जेब में ताश रहते। वह उनके साथ ताश खेलता और हर एक को हरा देता था।

वह सड़क पर से किसी को भी पकड़ लेता था – वह बच्चा हो या बड़ा या कोई और, और उससे कहता कि "आओ ताश खेलें।"

वह हमेशा पैसे के लिये ताश खेलता था। कोई बच्चा भी जो किसी दूकान जाता होता तो वह उसको बुला लेता। क्योंकि उसके पास पैसे होते थे सो वह उसके साथ खेलता और वह बच्चा बेचारा तुरन्त ही हार जाता और वह उसके पैसे ले लेता।

उसका एक छोटा सा घर था और उसमें उसका एक छोटा सा रसोईघर था। वहॉ वह अपने हाथ से ही खाना बनाता था। उसके

---

[65] The Cardplayer – a folktale from Reunion, Africa. Adapted from the book : "Indian Ocean Folktales: Madagaskar, Comoros, Mauritius, Reunion, Seychelles". By Germain Elizabeth. Retold by Christian Bard.

पास एक बर्तन था। उसके उस बर्तन में छह–सात लोगों का खाना बन जाता था।

वह अपना चावल नापता था और उसको उस बर्तन में डाल कर सुबह सुबह आग पर रख देता था। फिर वह ताश खेलता था। जब दिन के ग्यारह बजते थे और अगर वह जीत जाता था तो वह अपना सारा चावल खा लेता था।

शाम को फिर वह चावल बनने के लिये रखता था और बन जाने पर खा लेता था। अगर वह अपना सुबह का चावल ग्यारह बजे खत्म नहीं कर पाता था तो वह उसको शाम के लिये रख देता था। इस तरह से उसको ताश खेलने के लिये ज़्यादा समय मिल जाता था।

एक दिन वहॉ रहने वालों में से एक आदमी ने दूसरे आदमी से कहा — "जाओ और भगवान से मिलो और उससे कहो "भगवान तुम धरती पर आओ और इस ताश खेलने वाले को यहॉ से ले जाओ। वह हम सबको बहुत तंग करता है। यह सड़क पर हर जगह ताश खेलता है।

यह बच्चों और बड़ों को एक जैसा ही समझता है। सबके साथ ताश खेलता है और सबको हरा देता है। अच्छा होगा अगर भगवान आयें और इसको ले जायें तो।"

दूसरा आदमी बोला — "ठीक है। मैं जा कर भगवान से मिलता हूॅ।

सो वह भगवान के पास गया और बोला — "भगवन, मैं आपसे मिलने आया हूँ। हमारे यहाँ धरती पर एक आदमी है जो सबको ताश खेल कर बहुत तंग करता है।

वह एक तरफ ऊपर जाता है और दूसरी तरफ नीचे आता है। उससे सब परेशान रहते हैं। वह लोगों को काम नहीं करने देता और बच्चा हो या बड़ा सबसे ताश खेल कर उनके पैसे ले लेता है।

कोई बच्चा बेचारा पैसे ले कर कुछ खरीदने के लिये दूकान जाता है तो वह उसको ताश खेलने के लिये बहका लेता है और फिर उसको हरा कर उसके सारे पैसे ले लेता है।"

भगवान ने पूछा — "क्या उसका नाम ताश खेलने वाला है?"

वह आदमी बोला — "जी हाँ।"

भगवान ने कहा — "वह आयेगा, वह यहाँ जरूर आयेगा। मैं खुद देखने आता हूँ कि जो कुछ तुम मुझसे कह रहे हो क्या यह सब सच है?"

भगवान ने "होली घोस्ट"[66] और सेंट पीटर[67] से बात की और कहा "चलो इस ताश खेलने वाले को देख कर आते हैं। अगर जो कुछ यह आदमी कह रहा है सच हुआ तो हमें उसे धरती से हटाना ही पड़ेगा।"

---

[66] Holy Ghost – Christianity believes in Trinity – Father, Son and the Holy Ghost (Holy Spirit), each person itself being God.

[67] Saint Peter (Simon Peter) was one of the twelve Apostles of Jesus Christ and in popular culture is depicted holding the key of Kingdom of Heaven, sitting at the Pearly Gates to allow entry in the Kingdom of Heaven. See the names of Jesus' twelve disciples at the end of the book.

सो वे तीनों धरती की तरफ चल दिये। जब वे उस ताश खेलने वाले के घर पहुँचे तो शाम के पॉच बज रहे थे। उन्होंने उससे पूछा — "क्या तुम्हीं ताश खेलने वाले हो?"

वह बोला — "हॉ, क्यों?"

वे बोले — "हमने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है पर अब देर हो गयी है। क्या तुम हमको रात को खाना और ठहरने की जगह दे सकते हो?"

"हॉ हॉ क्यों नहीं। पर तुम देख रहे हो न कि मेरा कितना छोटा सा घर है। यह मेरा खाना बनाने का बर्तन है और मेरे पास बस एक डिब्बा ही चावल है। तुम लोग इधर सो सकते हो, जैसे भी चाहो और फिर हम सब यह चावल मिल कर खायेंगे। ठीक है?"

तीनों एक साथ बोले — "ठीक है। हमें मंजूर है।"

सो उस ताश खेलने वाले ने अपना चावल नापने वाला बर्तन उठाया। उससे नाप कर चावल लिये, उनको धोया और फिर उस बर्तन को आग पर रख दिया। बाकी सब लोग बात करने लगे।

जब चावल पक गये तो उन तीनों ने पूछा — "और वह चावल? क्या वह पका हुआ चावल नहीं है?"

बर्तन में चावल पक कर उठ रहा था। सो वह ताश खेलने वाला उठ कर गया। उसने उसमें से दो प्याले चावल निकाले। अब वह बर्तन चावल से आधा भरा हुआ था।

उसने देखा और बोला — "यह चावल तो बन गया है पर अभी बहुत सारा चावल बाकी है। मैं इसको कैसे परसूँ?"

किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने थोड़ा सा चावल ले लिया और उसे खाने लगे। चारों का पेट भर गया।

वे तीनों उस ताश खेलने वाले से बहुत खुश थे। उन्होंने कहा कि वह नम्रता में, अच्छे बरताव में और यह देखने में कि दूसरे लोगों ने ठीक से खाया है या नहीं सबसे पहले नम्बर पर आता है।" और वे सब सोने के लिये लेट गये।

अगली सुबह जब वे उठे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले से पूछा कि वे उसको वहाँ खाने और सोने के कितने पैसे दे दें।

वह बोला — "जो थोड़ा बहुत मेरे पास था उसी में से तुम लोगों ने यहाँ खा पी लिया। इसके अलावा तुम लोग इतनी छोटी सी जगह में सो भी लिये। और मेरे ख्याल से तो तुम लोग ठीक से सो भी नहीं पाये होगे। सो इस सबका उनको कोई पैसा देने की कोई जरूरत नहीं है।"

वे तीनों बोले — "नहीं नहीं, हम लोगों ने पेट भर कर खाया और पूरा पूरा ठीक से सोये। पर बस अब यह बता दो कि इस सब का हम तुम्हें कितना पैसा दे दें।"

वह ताश खेलने वाला बोला कि वह भी ठीक से सोया।

भगवान ने कहा — "अगर तुम हमसे कोई पैसा नहीं ले रहे तो मुझसे अपने लिये कोई मेरी कोई कृपा ही माँग लो।"

वह बोला — "कृपा? मैं तुमसे क्या कृपा मॉगू?"

भगवान बोले — "कुछ भी। जो भी तुम्हारी इच्छा हो। चलो, मैं तुमको सन्तोष दूँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम वह बैन्च देख रहे हो न? तो तुम्हारी कृपा के लिये मैं तुमसे यह मॉगता हूँ कि जो कोई भी उस बैन्च पर बैठे वह वहीं चिपक जाये।"

भगवान बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

होली घोस्ट बोले — "अब तुम मुझसे भी कुछ मॉग लो।"

"अरे तुमसे भी? मैं तुमसे क्या मॉगू?" फिर कुछ सोचते हुए बोला — "अच्छा ठीक है तुम मुझको यह दो कि जब कोई मेरे दरवाजे में हो और वह उस दरवाजे का सहारा ले कर खड़ा हो तो वह वहॉ से फिर हिल भी न सके। वह वहीं अटक जाये जब तक मैं उसको वहॉ से न हटाऊँ।"

होली घोस्ट बोले — "ठीक है जैसा तुम चाहो। ऐसा ही होगा।"

अब सेंट पीटर की बारी थी। उन्होंने कहा — "अब मेरा नम्बर है। बोलो, तुम मुझसे क्या मॉगते हो?"

ताश खेलने वाला बोला — "तो क्या तुम तीनों मेरे ऊपर कृपा करने वाले हो? ठीक है। तुम वह सन्तरे का

पेड़ देख रहे हो न? अगर कोई उस पेड़ पर मुझसे बिना पूछे चढ़े तो वह उस पर से तब तक नीचे न आ सके जब तक मैं न कहूँ।"

सेन्ट पीटर बोले — "ठीक है ऐसा ही होगा।"

इस तरह तीनों उस ताश खेलने वाले को तीन वरदान दे कर चले गये। कुछ दिनों बाद भगवान ने अपने एक मृत्यु दूत[68] को बुलाया और उसको धरती पर से ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये भेजा।

मृत्यु दूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले के घर पहुँचा। वहाँ जा कर उसने ताश खेलने वाले से कहा कि उसको भगवान ने बुलाया है।

ताश खेलने वाले ने पूछा — "पर उसने मुझे बुलाया ही क्यों है?"

"यह तो मुझे मालूम नहीं पर उन्होंने मुझे तुम्हें लाने के लिये भेजा है।"

ताश खेलने वाले ने कुछ सोचा और उससे अपने घर के सामने पड़ी बैन्च पर बैठने के लिये कहा कि वह वहाँ बैठे और वह अभी घर से तैयार हो कर आता है।

सो मृत्यु दूत बाहर उसकी बैन्च पर बैठ गया और ताश खेलने वाला घर के अन्दर तैयार होने चला गया। कुछ देर बाद वह तैयार हो कर आया और बोला — "चलो उठो मैं तैयार हूँ।"

[68] Translated for the word "Death Angel".

मृत्यु दूत ने उस बैन्च से उठने की बहुत कोशिश की पर वह तो उससे उठ ही नहीं सका। वह तो उससे चिपक गया था। उसने बहुत कोशिश की पर वह तो वहॉ से किसी तरह हिल भी नहीं पा रहा था।

उसने उससे कहा — "अरे यह क्या। मैं तो यहॉ से उठ ही नहीं पा रहा। कोई मुझे यहॉ से उठाओ।"

ताश खेलने वाला बोला — "जब तक तुम मुझसे यह वायदा नहीं करोगे कि तुम मुझे भगवान के पास नहीं ले जाओगे मैं तुम्हें यहॉ से नही उठाऊॅगा।"

मृत्यु दूत को उससे यह वायदा करना ही पड़ा तभी ताश खेलने वाले ने उसको वहॉ से उठाया वरन अपने आप तो वहॉ से वह कभी उठ ही नहीं सकता था। वहॉ से उठ कर वह सीधा भगवान के पास गया।

भगवान ने पूछा — "कहॉ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत ने भगवान से जा कर सारा हाल बताया तो भगवान ने पूछा कि कि तुम वहॉ उस बैन्च के ऊपर बैठे ही क्यों थे।

वह बोला — "उसने मुझसे बैठने के लिये कहा था मैं वहॉ इसलिये बैठा था। मुझे क्या पता था कि उस पर बैठ कर मैं वहॉ चिपक जाऊॅगा। और उसके बाद तो मैं वहॉ पर चिपक ही गया।

मैं तो वहॉ से उठ ही नहीं सका जब तक उसने मुझे अपने आप नहीं उठाया और उसने मुझे तब तक उठाया नहीं जब तक उसने मुझसे यह वायदा नहीं ले लिया कि मैं उसे आपके नहीं ले जाऊॅगा।

जब मैंने उससे यह वायदा किया कि मैं उसको अपने साथ नहीं ले जाऊॅगा तब कहीं जा कर उसने मुझे उस बैन्च से आजाद किया।"

"ठीक है अब तुम फिर से जाओ और उस ताश खेलने वाले को यहॉ ले कर आओ। मैं और कुछ नहीं जानता। मैं तुमको हुक्म देता हूॅ और तुम मेरे हुक्म का पालन करो।"

सो वह फिर ताश खेलने वाले के पास गया तो ताश खेलने वाला उसको फिर से आया देख कर बोला — "अरे तुम यहॉ फिर से?"

"हॉ भगवान ने मुझसे कहा है कि अबकी बार मैं तुमको ले कर ही आऊॅ। और इस बार कोई सौदा नहीं।"

ताश खेलने वाले ने मुॅह बना कर कहा — "हुॅह, कोई सौदा नहीं।"

मृत्यु दूत बोला — "अबकी बार तुमको मेरे साथ चलना ही पड़ेगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊॅगा। मैंने कह दिया न।"

"क्या तुम मेरे साथ नहीं जा रहे हो? यह नहीं हो सकता। तुमको चलना ही पड़ेगा। उन्होंने मुझसे तुमको साथ लाने के लिये कहा है। कल तुमने मुझे उस छोटी सी बैन्च पर पकड़ लिया था। मैंने भगवान को सब बता दिया तो उन्होंने मुझे फिर से यहॉ भेज दिया।"

"ठीक है तुम यहॉ बैठो।"

"क्या? उस बैन्च पर?"

"हॉ हॉ। ठीक है। तुम अगर बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो घर के बाहर मेरे दरवाजे पर खड़े हो कर मेरा इन्तजार करो मैं अभी आया।"

मृत्यु दूत उसके दरवाजे के सहारे खड़ा हो गया। जैसे ही वह वहॉ खड़ा हुआ तो वह तो वहॉ उसके घर के दरवाजे से चिपक गया।

ताश खेलने वाला बोला — "यह दरवाजा तुमको पकड़ कर रखेगा तब तक मैं ज़रा ताश खेल कर आया।"

मृत्यु दूत बोला — "ताश खेलने से क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने कहा न कि कोई सौदा नहीं बस तुमको मेरे साथ चलना है। अभी।"

ताश खेलने वाला बोला — "मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा। तुम यहीं ठहरो।"

यह सुन कर मृत्यु दूत तो पागल सा हो गया। उसने अपने आपको वहॉ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की "कोई सौदा नहीं ओ

ताश खेलने वाले। मुझे जाने दो। मैं जा कर यह बात भगवान को बता दूँगा तो वह मुझे फिर से तुमको लाने के लिये यहाँ भेज देंगे।"

ताश खेलने वाले ने दरवाजे से कहा — "देखो यह यहाँ खड़ा है इसको जाने मत देना।"

फिर वह मृत्यु दूत से बोला — "अगर तुम मुझे ले कर जाना चाहते हो तो मैं तुमको यहाँ से नहीं जाने दूँगा।"

मृत्यु दूत ने फिर कहा — "अच्छा तो मुझे तो जाने दो। मैं भगवान से जा कर कहूँगा कि मेरे साथ क्या हुआ था। और मैं तुमको भी नहीं ले जाऊँगा।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर मैं तुमको छोड़ दूँगा तो तुम मुझे अपने साथ ले जाओगे। मुझे मालूम है।"

मृत्यु दूत फिर बोला — "नहीं मैं वायदा करता हूँ कि मैं तुमको अपने साथ बिल्कुल नहीं ले जाऊँगा। लेकिन अब तो मुझे जाने दो।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर तुम मुझे नहीं ले जाओगे तो मैं तुमको छोड़ देता हूँ। जाओ यहाँ से चले जाओ। अब तुम उस दरवाजे से चले जाओ।"

मृत्यु दूत ने दरवाजा छोड़ दिया और वह वहाँ से चला गया। वह वहाँ से भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने पूछा — "अरे यह क्या तुम फिर से बिना ताश खेलने वाले को लिये आ गये?"

"भगवन मैं बताता हूँ कि मेरे साथ क्या हुआ।"

"मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम वहाँ गये होगे और जा कर उसकी बैन्च पर बैठ गये होगे।"

"नहीं भगवन इस बार मैं उसकी बैन्च पर नहीं बैठा बल्कि उसके दरवाजे ने मुझे पकड़ लिया। मैं उसके दरवाजे में फँस गया।"

भगवान ने पूछा — "क्या मैंने तुमको उसके दरवाजे में फँसने के लिये भेजा था। मैंने तुमको ताश खेलने वाले को लाने के लिये भेजा था। फिर जाओ और ताश खेलने वाले को ले कर आओ। अबकी बार कोई सौदा नहीं। बस उसको ले कर आओ। उसको धरती पर से उठा कर लाना है। समझे।"

मृत्यु दूत बोला — "मैं क्या करता भगवन मैं उसके दरवाजे में फँस गया था। मैंने उससे छूटने की बहुत कोशिश की पर मैं छूट ही नहीं सका सो मुझे उससे वायदा करना पड़ा कि मैं उसको नहीं ले जाऊँगा ताकि कम से कम मैं उसके दरवाजे से तो छूट सकूँ।"

भगवान बोले — "ठीक है अब भागो यहाँ से। और यह आखिरी बार है। अबकी बार उसको ले कर ही आना है। अबकी बार ख्याल रखना।"

सो वह मृत्यु दूत फिर धरती पर गया और फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँच कर उसको आवाज लगायी। ताश खेलने वाला बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से यहाँ? अब तुम्हें क्या चाहिये?"

"भगवान ने मुझे यहॉ तुमको ले आने के लिये भेजा है। अबकी बार तो तुमको हर हाल में चलना ही है।"

"नहीं, मैं नहीं जा रहा।"

"नहीं का क्या मतलब है अबकी बार तो तुमको चलना ही है। सुना तुमने?"

"अगर तुम उस बैन्च पर नहीं बैठना चाहते तो न बैठो। अच्छा तो दरवाजे के पास खड़े हो जाओ।"

"क्या वहॉ? ताकि फिर मैं वहॉ से हिल भी न सकूँ? नहीं नहीं बस तुम मेरे साथ अभी चलो।"

सो वह बाहर ही खड़ा रहा। न तो वह बैन्च पर बैठा और न ही वह दरवाजे के पास खड़ा हुआ। वहीं पास में सन्तरे का पेड़ था और उस पर पके सन्तरे लगे हुए थे।"

ताश खेलने वाला बोला — "अगर हम वाकई जा रहे हैं तो मुझे क्या करना होगा। ऐसा करो, देखो इस पके सन्तरे के पेड़ को देख रहे हो न। जब तक मैं तैयार होता हूँ तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ और वहॉ से कुछ सन्तरे ही तोड़ लो। चार सन्तरे तोड़ लेना – दो अपने लिये और दो भगवान के लिये।"

सो मृत्यु दूत उस पेड़ पर चढ़ गया। जब वह ऊपर तक पहुँच गया तो ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है अब मैं ताश खेलने जा रहा हूँ। मैं अभी आता हूँ।"

"क्या? मैं नीचे उतर रहा हूँ फिर साथ साथ चलते हैं।"

"नहीं तुम नीचे नहीं उतर रहे।"

"क्या? मैं नीचे नहीं उतर रहा?"

"हॉ, तुम नीचे नहीं उतर रहे। तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी ताश खेलने जा रहा हूॅ। जब मैं तय कर लूॅगा कि मुझे क्या करना है तब मैं तुम्हें बताऊॅगा तब हम चलेंगे। और तभी मैं तुम्हें यहॉ से आज़ाद करूॅगा।"

मृत्यु दूत बोला — "ओ ताश खेलने वाले मैं तुमसे कह रहा हूॅ कि मुझे जाने दो। पहले तुमने मुझे इस छोटी सी बैन्च पर पकड़ा, फिर तुमने मुझे दरवाजे में पकड़ा और अब तुमने मुझे इस सन्तरे के पेड़ पर पकड़ रखा है।

यह सब तो ठीक है, पर यह तो बताओ तुम्हें चाहिये क्या? भगवान ने मुझसे कहा है कि तुम यहॉ लोगों को परेशान करते हो सो मैं तुमको यहॉ से ले जाऊॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुमने क्या कहा कि भगवान ने कहा है कि मैं लोगों को परेशान करता हूॅ? मैं किसी को परेशान नहीं करता। मैं भगवान को भी परेशान नहीं करता। मैं किसी को परेशान नहीं करता सिवाय अपने साथ ताश खेलने वालों के।"

"ठीक है, तो मुझे तो जाने दो। मैं तुमको बता रहा हूॅ कि मैं जा रहा हूॅ।"

ताश खेलने वाला बोला — "नहीं, तुम मुझे साथ ले कर नहीं जा सकते। मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। तुम मुझे ले जाओगे इसलिये मैं तुम्हें यहाँ से जाने भी नहीं दे सकता।"

पर बाद में मत्यु दूत को ताश खेलने वाले से एक वायदा करना पड़ा कि अगर उसने उसको छोड़ दिया तो वह उसको ले कर नहीं जायेगा और भगवान के पास जा कर उनको यह बतायेगा कि वह धरती पर कैसे पकड़ा गया था।

ताश खेलने वाला राजी हो गया तो उसने उसको सन्तरे के पेड़ पर से नीचे बुला लिया। मृत्यु दूत वहाँ से किसी तरह नीचे उतर कर सन्तरे ले कर भगवान के पास चला गया।

जब वह भगवान के पास पहुँचा तो भगवान ने उससे पूछा — "कहाँ है वह ताश खेलने वाला?"

मृत्यु दूत बोला — "भगवन, इस बार उसने मुझे अपने सन्तरे के पेड़ में पकड़ लिया और फिर मुझे वह छोड़ ही नहीं रहा था। फिर भी उसने आपके लिये दो सन्तरे भेजे हैं और कहा है कि मैं इनको आपको दे दूँ।"

भगवान बोले — "मुझे किसी सन्तरे की जरूरत नहीं है। और मैंने तुमको वहाँ सन्तरे तोड़ने के लिये भी नहीं भेजा था। क्या मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम उसके सन्तरे के पेड़ पर चढ़ो? मुझको तो बस वह ताश खेलने वाला चाहिये और कुछ नहीं। और तुम उसको यहाँ ला नहीं रहे।"

सो वह अबकी बार चौथी बार धरती पर गया। इस बार उसको बहुत सावधान रहना था। भगवान ने भी उससे सावधान रहने के लिये कहा और कहा कि अगर वह सावधान नहीं रहा तो वह उसको वहॉ ले कर नहीं आ पायेगा।

सो वह फिर से ताश खेलने वाले के घर पहुँचा और जा कर उसको आवाज लगायी।

ताश खेलने वाला बाहर निकल कर आया और बोला — "अरे मृत्यु दूत तुम फिर से? तुम यहॉ फिर से वापस क्यों आ गये?"

मृत्यु दूत बोला — "आज तो तुमको जाना ही पड़ेगा। भगवान ने मुझसे कहा है कि आज मैं तुमको यहॉ से ले कर ही आऊँ। इस बार कोई सौदा नही – न कोई बैंच और न कोई दरवाजा और न ही कोई सन्तरे का पेड़। बस तुमको मेरे साथ चलना है।"

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है ठीक है, अगर मुझको तुम्हें ले कर जाना ही है तो मुझे पहले अपने ताश के पत्ते तो ले आने दो।"

सो वह अन्दर गया और अपने ताश निकल कर ले लाया। उनको उसने अपनी जेब में रख लिये। फिर उसने एक थैला उठाया उसको अपने कन्धे पर डाला और वह इस तरह उस मृत्यु दूत के पीछे पीछे चल दिया।[69]

[69] The final episode in Germain Elizabeth's "Cardplayer" tale exemplifies cultural creolization. European tradition contributes Cardplayer's expulsion from Heaven. African tradition puts a familiar

चलते चलते रास्ते में कुछ दूरी पर ताश खेलने वाले को ग्रैन इ्याब[70] दिखायी दे गया तो वह बोला — "ज़रा रुको ओ मृत्यु दूत, मैं चलते चलते इसके साथ ज़रा एक ताश की एक बाज़ी[71] खेल लूँ। अभी चलता हूँ।"

मृत्यु दूत बोला — "नहीं मुझे बहुत देर हो जायेगी। तुम मेरे साथ अभी चलो।"

ताश खेलने वाला गिड़गिड़ा कर बोला — "बस एक मिनट, केवल एक बाज़ी।"

कह कर वह ग्रेन इ्याब के पास पहुँच गया और उससे बोला — "आजा एक बाज़ी खेलते हैं।"

ग्रैन इ्याब बोला "क्या?"

ताश खेलने वाला बोला — "आ न ग्रैन इ्याब, एक बाज़ी खेलते हैं। अगर तुम जीत जाओ तो तुम मुझे खा लेना।"

उसने सोचा "वह मृत्यु दूत खड़ा है। या तो मैं उसके साथ चला जाऊँगा या फिर ग्रैन इ्याब के मुँह में चला जाऊँगा। क्या फर्क पड़ता है। मुझे तो यहाँ भी मरना वहाँ भी मरना।"

---

frame around it. Hell is forgotten in favor of two-sided conflict between the "little man" and the God. Elizabeth says "Cardplayer" earns the way to Heaven

[70] Gran Dyab – the other name of Satan

[71] Translated for the word "Deal"

वह फिर ग्रैन इ्याब से बोला — "सो अगर तुम जीत गये तो तुम मुझे खा लेना और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे शैतान दे देना।"

ग्रैन इ्याब बोला — "यकीनन। पर ओ ताश खेलने वाले, क्या तुम समझते हो कि तुम मेरे साथ ताश का खेल खेल सकते हो?"

फिर भी दोनों ताश खेलने बैठे तो ताश खेलने वाले ने ग्रैन इ्याब को हरा दिया। अपने समझौते के अनुसार ग्रैन इ्याब गया और अपने बारह छोटे शैतान ला कर उसको दे दिये।

उसने उन शैतानों को उससे ले कर अपने थैले में डाला, थैले को अपने कन्धे पर डाला और मृत्यु दूत से बोला — "देखा तुमने? मैं जीत गया न? मैं कोई ऐसे ही झक नहीं मार रहा था। चलो चलते हैं।"

दोनों चल दिये।

वे लोग स्वर्ग के दरवाजे पर आ पहुॅचे थे। दरवाजे पर सेंट पीटर खड़ा हुए थे। मृत्यु दूत सेंट पीटर से बोला — "मैं इस ताश खेलने वाले को पकड़ लाया हूॅ।"

सेन्ट पीटर ने पूछा — "तुम ताश खेलने वाले को ले आये?"

"हॉ यह रहा।"

"बहुत अच्छे, उसको अन्दर ले आओ।" सो ताश खेलने वाला अन्दर गया।

सेन्ट पीटर ने पूछा — "और यह इसके कन्धे पर क्या है?"

मृत्यु दूत बोला — "यह इसकी जीत है जब यह यहॉ आ रहा था तो रास्ते में एक ताश की बाजी खेला और उसमें यह जीत गया।"

सेन्ट पीटर बोले — "क्या इसने कुछ जीत लिया?"

मृत्यु दूत बोला — "हॉ। यह ग्रैन इ्याब के साथ खेला और उससे इसने उसके बारह छोटे शैतान जीत लिये।"

सेंट पीटर ने फिर पूछा — "यहॉ कोई शैतान नहीं आ सकता।"

"वह तो ठीक है। पर मैंने इनको जीता है। अब मैं इनका क्या करूॅ? ये मेरे हैं। तुम मुझे इनको रखने के लिये कहीं किसी कोने में कोई जगह दे दो।"

सेंट पीटर बोले — "मैंने तुमसे कहा न कि यहॉ अन्दर कोई भी शैतान नहीं आ सकता। तुम इनको बाहर छोड़ सकते हो।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। तब मैं इनको यहॉ दरवाजे के पास ही छोड़ देता हूॅ।" और उसने अपना थैला दरवाजे के पास ही रख दिया।

फिर वह बैठ गया और सेंट पीटर को घूरने लगा। कुछ पल उसको देखने के बाद वह बोला — "क्या वह तुम्हीं नहीं थे जो कुछ समय पहले मुझसे रात के लिये खाना और ठहरने की जगह मॉगने आये थे? तुम लोग तीन थे। है न?"

सेंट पीटर बोले — "हॉ, उनमें एक मैं भी था।"

ताश खेलने वाला बोला — "तुम तीनों भी एक चीज़ थे। तुम तीनों मेरे घर आये। मैं तुम लोगों को अन्दर ले गया। मैंने तुम्हारे लिये चावल बनाये। तुम लोगों को खाने के लिये दिये। तुम लोगों को सोने के लिये जगह दी।

और अब जब मैं यहॉ आया हूँ तो मैं अन्दर नहीं आ सकता क्योंकि मेरे पास कुछ छोटे शैतान हैं? तुम तो वाकई अजीब चीज़ हो।"

उसने अपने शैतानों का थैला उठाया और वहॉ से चला गया क्योंकि सेंट पीटर उसको उन शैतानों के साथ अन्दर नहीं आने दे रहे थे।

12 ताश खेलने वाला–2[72]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के यूनान देश की लोक कथाओं से ली है। यह लोक कथा बहुत ही मजेदार है। मौत की कथा का नाम सुन कर तुम डरना नहीं। इसमें देखना कि एक ताश खेलने वाला किस तरह से अपने बारह शैतानों को स्वर्ग ले जाता है।

एक बार एक आदमी था जो ताश खेलने का बहुत शौकीन था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा — "एक दिन काइस्ट को बुलाओ ताकि हम उनको दोपहर का खाना खिला सकें।"

उसकी पत्नी ने काइस्ट को खाने का न्यौता भेजा। काइस्ट ने कहा "ठीक है मैं आऊँगा।" सो दोपहर को काइस्ट अपने सारे शिष्यों के साथ ताश खेलने वाले के घर खाना खाने आये।

जब ताश खेलने वाले की पत्नी ने इतने सारे लोग देखे तो वह बोली — "मेरे पास इतनी सारी रोटी तो नहीं है।"

काइस्ट बोले — "मेरा विचार है कि होगी। नहीं तो यह देखो मेरे पास यह रोटी है आज हम यही खायेंगे।"

[72] The Cardplayer-2 – a folktale from Greece, Europe, translated by Nick Nicholas. Adapted from the Web Site http://mw.lojban.org/papri/cardplayer

खाने की मेज लगायी गयी और वे सब खाना खाने बैठे। क्राइस्ट ने रोटी को आशीर्वाद दिया और सबने खाना खाया। वह रोटी काफी ही नहीं बल्कि जरूरत से भी ज़्यादा थी।

खाना खाने के बाद क्राइस्ट ने शराब पी और ताश खेलने वाले से पूछा कि वह क्राइस्ट से क्या चाहता था। क्राइस्ट के शिष्यों ने उसको सलाह दी कि वह उनसे स्वर्ग का राज्य माँग ले।

पर ताश खेलने वाले ने कहा — "मेरे घर में एक सेब का पेड़ है। मेरे घर बहुत सारे लोग आते हैं और उस पेड़ से वे सेब तोड़ कर ले जाते हैं। सो मैं यह चाहता हूँ कि जो कोई भी इस पेड़ से सेब तोड़े वह इससे चिपक जाये।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट ने शराब का दूसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

क्राइस्ट के शिष्यों ने उससे फिर कहा स्वर्ग का राज्य माँग लो पर वह फिर बोला — "नहीं, अबकी बार मैं आपसे यह माँगता हूँ कि मैं जब भी ताश खेलूँ तो बस मैं ही जीतूँ।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट ने शराब का तीसरा प्याला पिया और फिर पूछा — "अब तुम्हारी क्या इच्छा है कि मैं तुम्हें क्या दूँ?"

इस बार उसने कहा — "स्वर्ग का राज्य।"

क्राइस्ट बोले — "जैसा तुम चाहोगे वैसा ही होगा।"

क्राइस्ट यह कह कर वहाँ से चले गये और वह आदमी ताश खेलने चला गया। अब क्या था वह आदमी तो क्राइस्ट के वरदान से जिसके साथ भी ताश खेलता था उसी को जीत लेता था।

कुछ समय बाद क्राइस्ट को तो सूली पर चढ़ा[73] दिया गया और वह आदमी ताश खेलता रहा।

जब क्राइस्ट स्वर्ग के राज्य में पहुँचे तो उन्होंने उस ताश खेलने वाले को स्वर्ग लाने के लिये एक देवदूत[74] भेजा। वह देवदूत नीचे धरती पर आया और ताश खेलने वाले से कहा — "तुम अब काफी खेल चुके अब तुम्हारी ज़िन्दगी खत्म।"

ताश खेलने वाला बोला — "ठीक है। मैं चलता हूँ। तब तक तुम इस सेब के पेड़ से थोड़े से सेब खाओ और बस मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

वह देवदूत उस पेड़ से सेब तोड़ने गया पर जैसे ही उसने उस पेड़ को छुआ वह उससे चिपक गया। उसने ताश खेलने वाले से कहा कि वह उसको उस पेड़ से छुड़ा ले।

ताश खेलने वाले ने कहा — "ठीक है मैं तुमको छुड़ाने आता हूँ पर जब मैं चाहूँगा तभी आऊँगा उससे पहले नहीं।" और यह कह कर वह इधर उधर घूमता रहा।

---

[73] Translated for the word "Crucified".

[74] Translated for the word "Angel"

जब वह इधर उधर घूमते घूमते थक गया तब वह देवदूत के पास आया और बोला — "मैं अब तुमको इस पेड़ से छुड़ाता हूँ और तुम्हारे साथ चलता हूँ।" कह कर उसने देवदूत को उस पेड़ से छुड़ाया और उसके साथ चल दिया।

रास्ते में नरक पड़ा। वहाँ हैडेस[75] अपने बारह छोटे साथियों के साथ था तो ताश खेलने वाला उससे बोला — "मैं तुमसे ताश की एक बाज़ी खेलता हूँ। अगर मैं हार गया तो मैं तुम्हारे पास हमेशा के लिये रह जाऊँगा और अगर तुम हार गये तो तुम मुझे अपने ये बारह छोटे साथी दे देना।"

हैडेस राजी हो गया और उसने ताश खेलना शुरू कर दिया। अब क्राइस्ट के वरदान के साथ उससे कोई जीत तो सकता नहीं था सो वह जीत गया और हैडेस से वह उसके बारह छोटे साथी ले कर वहाँ से चलता बना।

अब वह स्वर्ग आया। जब क्राइस्ट ने उस आदमी के साथ दूसरे लोगों को आते देखा तो उस आदमी से कहा — "मैंने तो केवल तुमको ही आने को कहा था पर तुम तो बहुत सारे लोगों को अपने साथ ले आये हो।"

वह आदमी बोला — "मैंने भी तो खाने के लिये केवल आपको ही बुलाया था और आप तेरह लोग आये थे। मैं भी अपने साथ बारह लोगों को ले कर आया हूँ।"

[75] Hades is the Devil

यह सुन कर क्राइस्ट ने सारे तेरह लोगों को स्वर्ग में आने की इजाज़त दे दी।

13 पादरी की आत्मा[76]

ईसाई धर्म की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस कहानी में देखो कि एक पादरी किस तरह से भगवान को स्वर्ग और नरक को नहीं मानता पर जब उसकी मौत आती है तो वह क्या रंग बदलता है।

पुराने समय में आयरलैंड में बड़े बड़े स्कूल थे जहॉ लोगों को हर तरीके की शिक्षा दी जाती थी और उस समय के वहॉ के गरीब से गरीब लोग भी आज के अच्छे पढ़े लिखे आदमियों से ज़्यादा जानते थे।

ऐसे ही समय में एक बच्चा अपनी होशियारी से सबको चकित किये दे रहा था। उसके गरीब माता पिता मेहनत मजदूरी कर के अपना और अपने बच्चों का पेट पालते थे।

पर यह बच्चा पैसे से जितना गरीब था ज्ञान का उतना ही अमीर था। राजाओं और महाराजाओं के बच्चे भी उससे ज्ञान में आगे नहीं थे।

कई बार वह अपने मास्टरों को भी नीचा दिखा देता था क्योंकि वे जब भी उसको कोई चीज़ सिखाने की कोशिश करते तो वह उनको कुछ ऐसी बात बता देता जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुनी होती।

[76] Spirit of a Priest – a folktale of Ireland, Europe

उसकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वह बहस में बहुत होशियार था। वह पहले काले को सफेद साबित करता और फिर जब दूसरे को इस बात का विश्वास हो जाता कि हॉ यह तो सफेद ही है तो फिर अपनी होशियारी से उसी सफेद को काला साबित कर देता था।

जब वह बच्चा बड़ा हो गया तो उसके माता पिता उससे बहुत खुश रहते थे। उन्होंने सोच लिया कि वे उसको पादरी बनायेंगे और उन्होंने एक दिन उसको पादरी बना दिया। क्योंकि इतना अक्लमन्द आदमी उस समय पूरे आयरलैंड में कोई नहीं था इसलिये कोई उसका मुकाबला भी नहीं कर सकता था।

अगर कोई बिशप[77] भी उससे बात करने की कोशिश करता तो उसे तुरन्त ही पता चल जाता कि वह तो उसके आगे कुछ भी नहीं जानता।

उस समय में आजकल की तरह के स्कूल और मास्टर नहीं हुआ करते थे। चर्च के पादरी लोग ही लोगों को पढ़ाया करते थे और क्योंकि यह पादरी उस समय का सबसे अक्लमन्द पादरी था इसलिये बहुत सारे देशों के राजा अपने अपने बेटों को इसी पादरी के पास पढ़ने के लिये भेजते थे।

धीरे धीरे इस पादरी में घमंड आने लगा और वह यह भी भूल गया कि वह क्या था और किसकी मेहरबानियों से आज इस जगह

[77] Bishop – a high status man in Church

पहुँचा था। उसके अन्दर बहस करने की चतुरता का घमंड घर करता चला गया।

वह यह साबित करता चला गया कि न तो कहीं स्वर्ग है और न ही कहीं नरक है, न कहीं आत्मा है और न ही कहीं परगेटरी[78] ही है। यहाँ तक कि कहीं भगवान भी नहीं है।

वह हमेशा यह कहा करता था — "आत्मा को किसने देखा है? अगर तुम मुझे एक भी आत्मा दिखा दो तो मैं विश्वास कर लूँगा कि आत्मा है।"

लेकिन उस जैसे होशियार आदमी को यह कौन समझाता कि आत्मा को तो देखा नहीं जा सकता। और फिर सारे लोग यही मानने लग गये।

उसने शादी भी की पर उसकी शादी कराने वाला दुनियाँ भर में कोई पादरी ही नहीं मिला तो अपनी शादी की सब रस्में उसे खुद ही पूरी करनी पड़ीं।

लोग आपस में तरह तरह की बातें करते पर ऊपर से कोई कुछ नहीं कह सकता था क्योंकि सब राजाओं के लड़के उसी से पढ़ते थे और सब उसी का पढ़ाया बोलते थे।

[78] Purgatory – According to Catholic Church doctrine, Purgatory is an intermediate state after physical death in which those destined for heaven "undergo purification, so as to achieve the holiness necessary to enter the joy of heaven.

वे सब तो उसी के चेले थे और उसी की बातों में विश्वास करते थे। वे सोचते थे कि वह जो कुछ कहता था ठीक ही कहता था। इस तरह दुनियॉ में बुराई फैलती जा रही थी।

कि एक रात स्वर्ग से एक देवदूत[79] आया और पादरी से बोला कि "तुम्हारी ज़िन्दगी अब केवल चौबीस घंटों की और है।"

पादरी यह सुन कर कॉप गया और उसने देवदूत से उसे इस धरती पर रहने के लिये कुछ और ज़्यादा समय देने की प्रार्थना की परन्तु देवदूत अपनी बात का पक्का था इसलिये पादरी को उससे ज़्यादा समय नहीं मिल पाया।

फिर भी उस देवदूत ने उससे पूछा — "तुम जैसे पापी को और ज़्यादा समय क्यों चाहिये?"

पादरी ने दीनता भरी आवाज में कहा — "देवदूत, मुझ पर रहम करो, मुझ पर दया करो, मेरी आत्मा पर तरस खाओ।"

देवदूत ने मुस्कुरा कर पूछा — "तो तुम्हारी आत्मा भी है? परन्तु इस बात का तुमको पता कैसे चला कि तुम्हारी आत्मा भी है?"

पादरी बोला — "जबसे तुम मेरे सामने आये हो तभी से यह मेरे शरीर के अन्दर फड़फड़ा रही है। मैं भी कितना बेवकूफ था कि मुझे इसका पहले पता ही नहीं चला।"

[79] Translated for the word "Angel"

"तुम सचमुच में बेवकूफ हो। तुम्हारे पढ़ने लिखने का क्या फायदा अगर तुम यही पता न चला सके कि तुम्हारी एक आत्मा भी है।" देवदूत बोला।

पादरी बोला — "ओह मेरे भगवान, अच्छा यह बताओ मरने के कितनी देर बाद मैं स्वर्ग पहुँच जाऊँगा?"

देवदूत हँस कर बोला — "तुम स्वर्ग कभी नहीं पहुँचोगे क्योंकि तुम तो स्वर्ग को मानते ही नहीं।"

पादरी बोला — "क्या मैं परगेटरी जा सकता हूँ?"

देवदूत बोला — "पर तुम तो परगेटरी को भी नहीं मानते। तुम तो सीधे नरक जाओगे।"

अबकी बार पादरी के हँसने की बारी थी। वह बोला — "पर मैं तो नरक को भी नहीं मानता इसलिये तुम मुझे वहाँ भी नहीं भेज सकते।"

यह सुन कर देवदूत कुछ परेशान सा हुआ और बोला — "मैं बताता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ। तुम चाहो तो अभी धरती पर सौ साल तक रह सकते हो और सभी खुशियों को भोग सकते हो, या फिर चौबीस घंटों के बाद तकलीफ के साथ मर सकते हो।

मैं तुमको परगेटरी ले जाऊँगा फैसले के दिन[80] तक का इन्तजार करने के लिये। पर इस बीच अगर तुमको कोई ऐसा आदमी मिल जाता है जो भगवान में विश्वास करता हो, स्वर्ग नरक में विश्वास रखता हो, तो तुम्हारी ज़िन्दगी कुछ सुधर सकती है।" यह कह कर वह देवदूत वहॉ से गायब हो गया।

पादरी को निश्चय करने में पॉच मिनट भी नहीं लगे। उसने सोच लिया था कि उसे क्या करना था। चौबीस घंटे तो बहुत होते थे उसके लिये वह करने के लिये जो देवदूत ने उसको बताया था।

वह तुरन्त ही एक बहुत बड़े कमरे में पहुँचा जहॉ उसके बहुत सारे चेले और राजाओं के लड़के बैठे थे। उसने उनसे कहा कि तुम सब लोग सब सच बोलना।

तुम लोग मेरे खिलाफ बोल रहे हो इस बात से ज़रा भी नहीं डरना। यह बताओ कि तुम्हारा क्या विश्वास है कि आदमी के आत्मा होती है क्या?

वे बोले — "मास्टर जी, पहले तो हम लोग मानते थे कि आदमी के अन्दर आत्मा होती है परन्तु अब जबसे हमने आपसे पढ़ा है कि कहीं कोई आत्मा नहीं है तबसे हम इसमें विश्वास नहीं करते। अब तो कहीं कोई स्वर्ग नहीं है, कहीं कोई नरक नहीं है और कहीं कोई भगवान भी नहीं है, यही आपने हमें सिखाया है।"

[80] Translated for the words "The Day of Judgment". In Christianity it is believed that there will be a Day of Judgment also called "The Judgment Day", or "Final Judgment", or "The Day of the Lord" etc is the day in every nation resulting in the glorification of some and the punishment of others.

पादरी डर के मारे पीला पड़ गया और ज़ोर से बोला — "देखो, मैंने तुम लोगों को जो कुछ भी सिखाया था वह गलत था। भगवान है और एक अमर आत्मा भी है। पहले मैं जिनमें विश्वास नहीं करता था आज उनको मैं मानता हूँ।"

वहाँ बैठे सभी लोग ज़ोर ज़ोर से हँस पड़े क्योंकि वे समझे कि उनका मास्टर उनको बहस करने के लिये उकसा रहा है। सो वे भी ज़ोर से चिल्लाये — "साबित कीजिये, साबित कीजिये। भगवान को किसने देखा है और आत्मा को भी किसने देखा है?" और कमरा एक बार फिर ठहाकों से भर गया।

पादरी कुछ कहने के लिये उठा और उसने कुछ कहा भी पर सब कुछ उन ठहाकों के शोर में दब कर रह गया। वह चिल्लाता रहा — "भगवान है, आत्मा भी है, स्वर्ग भी है और नरक भी है।" परन्तु किसी ने उसकी एक न सुनी।

उसने सोचा कि शायद उसकी पत्नी उसका विश्वास कर लेगी परन्तु उसने कहा कि वह भी उसी की सिखायी हुई बातों को मानती है। और ऐसा एक पत्नी को करना भी चाहिये क्योंकि पति पत्नी के लिये भगवान से भी ऊँचा होता है।

इसको सुन कर तो वह बहुत निराश हो गया और घर घर जा कर पूछने लगा कि क्या वे भगवान में विश्वास करते थे। पर सबसे उसको एक ही जवाब मिला "हम तो उसी में विश्वास करते हैं जो आपने हमें सिखाया है।"

अब तो पादरी डर के मारे बिल्कुल पागल सा हो गया क्योंकि समय बीतता जा रहा था और उसको कोई एक भी आदमी भगवान में विश्वास करने वाला नहीं मिल रहा था।

वह अकेला ही एक कमरे में जा कर बैठ गया और रोने लगा। कभी कभी डर के मारे वह चिल्ला पड़ता क्योंकि उसके मरने का समय पास आता जा रहा था।

इतने में एक बच्चा आया और बोला — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

बच्चे के ये शब्द सुनते ही पादरी में जान आ गयी। उसने तुरन्त बच्चे को गोद में उठा लिया और उतावली से उससे पूछा — "बेटा क्या तुम भगवान को मानते हो?"

बच्चा बोला — "मैं यहॉ उसी के बारे में जानने के लिये तो आया हूँ। क्या आप मुझे यहॉ का सबसे अच्छा स्कूल बतायेंगे?"

पादरी बोला — "सबसे अच्छा स्कूल और सबसे अच्छा मास्टर तो तुम्हारे पास ही है बेटा।" यह कह कर उसने उसको अपना नाम बता दिया।

बच्चा बोला — "नहीं नहीं, मैं इस आदमी के पास नहीं जाना चाहता क्योंकि मैंने सुना है कि वह भगवान को नहीं मानता, स्वर्ग और नरक को नहीं मानता। यहॉ तक कि अपने शरीर में रह रही आत्मा को भी वह नहीं मानता क्योंकि वह उसको देख नहीं सकता। परन्तु मैं उसको बहुत जल्दी नीचा दिखा दूँगा।"

पादरी को उस बच्चे की बात सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उससे रहा न गया तो उसने उससे पूछ ही लिया — "तुम उसको कैसे नीचा दिखाओगे बेटा?"

बच्चा बोला — "यह तो बड़ा आसान है। मैं उससे कहूँगा कि अगर तुम ज़िन्दा हो तो तुम अपना ज़िन्दा रहना साबित करो।"

पादरी बोला — "पर बेटे वह ऐसा कैसे कर सकता है? क्योंकि सभी जानते हैं कि वे ज़िन्दा हैं पर वे उसे दिखा तो नहीं सकते क्योंकि उसको देखा नहीं जा सकता।"

इस पर बच्चा बोला — "सो अगर हमारे अन्दर ज़िन्दगी है और हम उसे केवल इसलिये नहीं दिखा सकते क्योंकि वह छिपी हुई है तो हमारे अन्दर आत्मा भी तो हो सकती है जो हमारे अन्दर इसी तरह छिपी हुई हो।"

पादरी ने जब उस बच्चे के मुँह से ऐसे शब्द सुने तो उसने उसके सामने अपने घुटने टेक दिये और रो पड़ा क्योंकि अब उसे विश्वास हो गया था कि उसकी आत्मा अब सुरक्षित है।

कम से कम एक आदमी तो उसको भगवान में विश्वास रखने वाला मिला और उसने उस बच्चे को शुरू से ले कर आखीर तक की अपनी सारी कहानी सुना दी।

फिर बोला — "लो बेटे यह चाकू लो और इससे मेरी छाती को गोद दो और गोदते रहो जब तक तुम्हें मेरे चेहरे पर मौत का पीलापन नजर न आ जाये। फिर ध्यान से देखना जब मैं मरूँगा तो

मेरे शरीर से एक ज़िन्दा चीज़ निकलेगी। उससे तुमको पता चल जायेगा कि मेरी आत्मा भगवान के पास पहुँच गयी है।

और जब तुम यह देखो तो तुम तुरन्त भाग कर मेरे स्कूल जाना और मेरे सभी चेलों को यह देखने के लिये बुला लाना। उनको बताना कि जो कुछ भी मैंने उनको ज़िन्दगी भर सिखाया वह सब गलत था क्योंकि कहीं भगवान है जो पापों की सजा देता है। स्वर्ग भी है और नरक भी है और हर आदमी के पास एक अमर आत्मा भी है।"

बच्चा बोला —"मैं कोशिश करूँगा।" कह कर वह बच्चा घुटनों के बल बैठ गया। पहले उसने प्रार्थना की फिर चाकू उठाया और पादरी की छाती में मारा और तब तक मारता रहा जब तक उसकी छाती का मॉस चिथड़े चिथड़े नहीं हो गया।

परन्तु इतना सब होने के बावजूद भी पादरी मरा नहीं। हालॉकि उसको दर्द बहुत था पर चौबीस घंटे पूरे होने से पहले वह नहीं मरा। आखिर उसके चेहरे पर मौत का पीलापन झलकने लगा।

उसी समय बच्चे ने देखा कि एक छोटी सी कोई ज़िन्दा चीज़, चार सफेद पंखों वाली, पादरी के शरीर से निकली और उसके सिर पर मॅडराने लगी।

वह तुरन्त उसके शिष्यों को उनके मास्टर की आत्मा दिखाने के लिये बुला लाया। उन्होंने भी उसको तब तक देखा जब तक वह उड़ कर बादलों के उस पार नहीं चली गयी।

आयरलैंड की यह सबसे पहली तितली थी और आज वहाँ सब यह जानते हैं कि तितलियों में मरे हुए लोगों की आत्मा होती है और उस रूप में दर्द सहती हुई शान्ति पाने के लिये परगेटरी में घुसने का इन्तजार करती रहती हैं।

14 मौत धरती पर कैसे आयी[81]

यूगान्डा के सारे बगान्डा लोगों का पूर्वज किन्टू[82] एक बार नाम्बी[83] के प्यार में पड़ गया। नाम्बी भगवान की बहुत सुन्दर बेटी थी। किन्टू ने यह साबित कर रखा था कि वह नाम्बी के लिये एक बहुत अच्छा पति रहेगा भगवान ने यह सोचा कि नाम्बी की शादी उससे कर दी जाये।

सो बड़ी धूमधाम से स्वर्ग में उन दोनों की शादी हो गयी। पर उसके बाद पति पत्नी धरती पर लौटने लगे। वे लोग वहॉ जा कर ठीक से रहने लगें इसलिये भगवान ने उन्हें एक भेड़ दी एक बकरी दी एक मुर्गा दिया और एक केले का पेड़ दिया।

उसके बाद उन्होंने उनसे कहा कि इससे पहले नाम्बी का भाई वालुम्बे[84] अपनी यात्रा से वापस लौट कर आये वे अगले दिन सुबह जल्दी ही वहॉ से चले जायें।

वालुम्बे अपनी बहिन को बहुत प्यार करता था। अगर उसको यह पता चल जायेगा कि वह उसके बिना ही चली गयी तो वह बहुत नाराज हो जायेगा।

---

[81] How the Death Came on Earth. A folktale from Uganda, Africa.
Taken from : https://files.eric.ed.gov/fulltext/ED132087.pdf

[82] Kintu – maybe an Ugandan male name. Baganda maybe a tribe of Uganda.

[83] Nambi was the daughter of God

[84] Walumbe – Nambi"s brother, the Death.

दूसरी ओर भगवान यह नहीं चाहते थे कि वालुम्बे धरती पर जाये क्योंकि वह यह जानते थे कि वह यह जान कर उनसे बहुत नाराज हो जायेगा।

सो भगवान की इच्छा के अनुसार नाम्बी और किन्टू अगले दिन सुबह जल्दी ही धरती पर चले गये। जब वे आधे रास्ते तक ही पहुँचे थे कि नाम्बी को याद आया कि वह मुर्गे को खिलाने के लिये दाना तो स्वर्ग में ही भूल आयी।

पिता की सलाह के बावजूद वह यह सोच कर स्वर्ग दौड़ी गयी कि वह अपने भाई से मिलने से बच जायेगी पर ऐसा नहीं हुआ। उसका भाई वहाँ गुस्सा हुआ खड़ा था और जब उसने अपनी बहिन को वहाँ देखा तो फिर उसने उसको अपनी आँखों के सामने से दूर भेजने से मना कर दिया।

उसने कहा कि वह भी उसके साथ उसके नये घर जायेगा और इस तरह से वह अपनी बहिन के साथ उसके घर आ गया।

और इस तरह से मौत धरती पर आयी।

15 आत्मा अमर कैसे हुई[85]

ज़ैर देश के गबान्डी[86] का कहना है कि बहुत समय पहले मौत और आत्मा एक दूसरे की कट्टर दुश्मन थीं। मौत का यह शान बघारना था कि वह आत्मा को मार सकती थी। इस पर आत्मा जवाब देती — "नहीं मुझे कोई नहीं मार सकता।"

हर बार जब भी मौत आत्मा को हराने का प्रयत्न करती तभी कुछ न कुछ हो जाता और वह अपने इरादों में असफल हो जाती। एक दिन मौत ने आत्मा को पकड़ने का एक ऐसा प्लान बनाया जो कभी असफल हो ही नहीं सकता था।

पहले तो मौत ने आत्मा को खाना खाने का एक बुलावा भेजा जिसमें वे शान्ति से रहने की कसम खाने वाले थे। फिर उसने अपने सारे सिपाहियों को बुला कर एक मीटिंग की और उन्हें आत्मा को मारने का अपना प्लान बताया।

आत्मा को मौत का बुलावा कुछ सन्देहजनक लगा तो उसने अपने दोस्त चमगादड़ को बुलाया और उसे मौत के शहर में जा कर यह पता लगाने के लिये कहा कि वहाँ जा कर वह यह पता लगाये कि मौत के इस तरह आत्मा को खाने पर बुलाने में क्या रहस्य है।

---

[85] How the Soul Became Immortal. A folktale from Zaire, Africa.
Taken from : https://files.eric.ed.gov/fulltext/ED132087.pdf

[86] Ngbandi – name of a male in Zaire country in Africa

चमगादड़ मौत के घर गया और उसकी छत के नीचे उलटा लटक गया जहाँ उसे कोई नहीं देख सकता था।

जल्दी ही उसने मौत को अपने सिपाहियों से यह कहते सुना — "आखिर मैं आत्मा को मार दूँगा। मैंने उसे यहाँ अपने मेहमान की तरह बुलाया है। मैं उसे अपने घर में सुलाऊँगा और यह दिखाने के लिये कि मैं उसे कितनी आराम से रख रहा हूँ मैं सोने के लिये किसी छोटे घर में चला जाऊँगा।

जब वह सो जायेगा तब बिजली तुम एक बादल में छिप जाना और जब वह बादल उस घर के ऊपर से जाये तब तुम उसके ऊपर कूद पड़ना और उसे मार देना। मौत के सिपाहियों ने सोचा कि यह तो बहुत ही अच्छी तरकीब है। इसमें तो असफल होने का कोई मौका ही नहीं है।

यह सुन कर चमगादड़ तुरन्त ही वहाँ से उड़ कर आत्मा के पास जा पहुँचा। आत्मा ने बड़ी धूमधाम से उसका स्वागत किया। चमगादड़ ने उसे मौत के घर में हुई पूरी घटना की जानकारी दी।

मौत ने अपने सम्मानित मेहमान के लिये अपना घर बहुत अच्छे से सजाया और उसमें उसको सोने के लिये छोड़ कर किसी दूसरे घर में सोने के लिये चला गया। चमगादड़ के अलावा सभी आराम से सो गये।

जैसे ही चमगादड़ ने बादल आते देखा उसने तुरन्त ही आत्मा को जगा दिया सो वे दोनों तुरन्त ही वहॉ से उड़ कर अपने घर चले गये। मौत का घर पूरे का पूरा नष्ट हो गया।

मौत की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था। उसने एक बड़ा उत्सव मनाने का आदेश दिया। यह उत्सव खास कर के बिजली के सम्मान में था क्योंकि उसी ने आत्मा को मारा था।

जैसे ही वे उस उत्सव को मनाना शुरू करने वाले थे कि उन्होंने आत्मा को उत्सव मनाने का शोर सुना। आत्मा यह उत्सव इसलिये मना रही थी क्योंकि वह बच गयी थी।

यह देख सुन कर मौत तो इतनी गुस्सा और शर्मिन्दा हुई कि उसने सोच लिया कि वह अब आत्मा से कभी सामना नहीं करेगी।

और तभी से आत्मा अमर है।

List of Stories of "Death in Folktales"

1. The Witch and the Sister of the Sun
2. One Night in Paradise
3. The Just Man
4. Kowfie and the Gods
5. Journey to Land of Dead
6. Voice of the Death
7. Death's Messengers
8. The Soldier and Death
9. The Tailor in Heaven
10. Godfather Death
11. Cardplayer-1
12. The Cardplayer-2
13. Spirit of a Priest
14. How the Death Came on Earth
15. How Death Became Immortal

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022